साप्ताहिक

आरएनआई न. :– जेकेएचआईएन/25/ए0631

सबका जम्मू कश्मीर

हिन्दी • वर्षः 2 • अंकः 10 • कठुआ, शनिवार 7 मार्च 2026 • पृष्ठः 16 • मूल्यः 5 रुपए

भारत की राष्ट्रपति ने 9वें अंतर्राष्ट्रीय संथाल सम्मेलन में सहभघगिता की

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में आयोजित 9वें अंतर्राष्ट्रीय संथाल सम्मेलन में सहभघगिता की। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि संथाल समुदाय के लिए यह गर्व की बात है कि हमारे पूर्वज तिलका माझी ने लगभग 240 वर्ष पूर्व शोषण के विरुद्ध विद्रोह का ध्वज उठाया था। उनके विद्रोह के लगभग 60 वर्ष बाद, वीर भाई सिदो–कान्हू और चांद–भैरव ने वीर बहनों फूलो–झानो के साथ मिलकर 1855 में संथाल हुल का नेतृत्व किया था।

राष्ट्रपति ने कहा कि वर्ष 2003 संथाली समुदाय के इतिहास में सदैव याद रखा जाएगा। उसी वर्ष संथाली भाषा को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था। पिछले वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म्म जयंती पर, ओल चिकी लिपि में संथाली भाषा में लिखित भारत का संविधान जारी किया गया था।

राष्ट्र्रपति ने कहा कि 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मु ने ओल चिकी लिपि का आविष्कार किया था। हाल ही में हमने इस आविष्कार की शताब्दी मनाई है। उनके योगदान ने संथाली भाषी लोगों को अभिव्यक्ति का एक नया द्वार प्रदान किया। उन्होंने षबिदु चंदनष, ष्खेरवाल वीरष, ष्दलगे धनष और षसिदो कान्हू – संथाल हुलष जैसे नाटकों की रचना भी की। इस प्रकार उन्होंने संथाली समुदाय में साहित्य और सामाजिक चेतना का प्रकाश फैलाया। उन्होंने कहा कि संथाल समुदाय के सदस्यों को अन्य भाषाओं और लिपियों का अध्ययन करना चाहिए लेकिन अपनी भाषा से जुड़े रहना चाहिए।

राष्ट्रपति ने कहा कि आदिवासी समुदायों ने सदियों से अपने लोक संगीत, नृत्य और परंपराआ. ें को संरक्षित रखा है। उन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को बनाए रखा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रकृ ति संरक्षण का पाठ भावी पीढ़ियों तक पहुँचाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोक परंपराओं और पर्यावरण को संरक्षित करने के साथ–साथ, हमारे आदिवासी समुदायों को आधुनिक विकास को अपनाना चाहिए और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि संथाल समुदाय सहित आदिवासी समुदायों के सदस्य प्रगति और प्रकृति के बीच सामंजस्य का उदाहरण

■ शेष पेज 2..

आईएनएस तरंगिणी श्रीलंका नौसेना के सी राइडर्स के साथ समुद्री प्रशिक्षण के लिए कोलंबो पहुंची

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : भारतीय नौसेना का पाल प्रशिक्षण जहाज आईएनएस तरंगिणी 06 मार्च 2026 को श्रीलंका नौसेना के सी राइडर्स के समुद्री प्रशिक्षण को पूरा करने के बाद कोलंबो पहुंचा। श्रीलंका नौसेना एवं समुद्री अकादमी के तीन अधिकारियों और 26 प्रशिक्षुओं ने त्रिंकोमाली में जहाज पर समुद्री प्रशिक्षण तैनाती के लिए सवार हुए थे।समुद्री सैर के दौरान, प्रशिक्षुओं ने गहन पाल प्रशिक्षण प्राप्त किया और पाल लगाने तथा पाल के नीचे ड्यूटी रखने की बारीकियों से परिचित हुए। इस यात्रा ने प्रशिक्षुओं को जहाज के चालक दल के मार्गदर्शन में जहाज को चलाने और संभालने के व्यापक अवसर प्रदान किए। प्रशिक्षण तैनाती ने दोनों नौसेनाओं के बीच पारस्परिक सीखने और पारस्परिक संचालनशीलता को और मजबूत किया, जिससे समुद्री सहयोग और प्रशिक्षण संबंधों को बढ़ावा मिला।

कोलंबो पहुंचने पर, जहाज का स्वागत श्रीलंका नौसेना के प्रति. निधियों और श्रीलंका में भारत के उच्चायोग के अधिकारियों ने किया।

आईएनएस तरंगिणी के कमांडिंग अधिकारी ने पश्चिमी नौसेना क्षेत्र के कमांडर रियर एडमिरल जगथ कुमारा से भेंट की और नौसेना सहयोग को बढ़ाने तथा सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के मार्गों पर चर्चा की। तीन दिवसीय बंदरगाह प्रवास

■ शेष पेज 2...

डॉ. जितेंद्र सिंह ने अधिकारियों और समुद्र विशेषज्ञों के साथ लक्षद्वीप में समुद्र-आधारित विलवणीकरण परियोजनाओं में हुई प्रगति की समीक्षा की

सबका जम्मू कश्मीर

केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने लक्षद्वीप में राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी) की ओर से कार्यान्वित की जा रही प्रमुख समुद्र प्रौद्योगिकी परियोजनाओं में हो रही प्रगति की समीक्षा की। इस समीक्षा का मुख्य उद्देश्य जल सुरक्षा को सुदृढ़ करना और द्वीपीय क्षेत्र के लिए संपोषित ऊर्जा समाधानों को प्रोत्साहन देना था।

कवरत्ती में एनआईओटी के वैज्ञानिकों और अधिकारियों के साथ हुई समीक्षा बैठक के दौरान, मंत्री जी ने द्वीपों में संचालित मौजूदा निम्न तापमान तापीय विलवणीकरण (एलटीटीडी) संयंत्रों के कार्यान्वयन का आकलन किया और कवरत्ती में विकसित हो रही आगामी महासागर तापीय ऊर्जा रूपांतरण (ओटीईसी) संचालित विलवणीकरण सुविधा का जायजा लिया।

अधिकारियों ने मंत्री जी को जानकारी दी कि पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की ओर से एनआईओटी के जरिए स्थापित एलटीटीडी संयंत्र वर्तमान में लक्षद्वीप के आठ द्वीपों में काम कर रहा है, जो इस क्षेत्र में पीने योग्य पानी का एक भरोसेमंद स्रोत प्रदान करता

■ शेष पेज 2..

चेन्नई में नारियल किसानों के बीच पहुंचे केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, किया सीधा संवाद

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : चेन्नई के आईआईटी मद्रास परिसर में आज नारियल किसानों और हितधारकों के साथ संवाद के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने साफ किया कि बजट 2026.27 में घोषित 'नारियल प्रमा. `शन स्कीम' केवल दिल्ली के दफ्तरों में बैठकर नहीं, बल्कि तमिलनाडु से असम तक खेतों में काम कर रहे किसानों के सुझावों के आधार पर बनेगी।

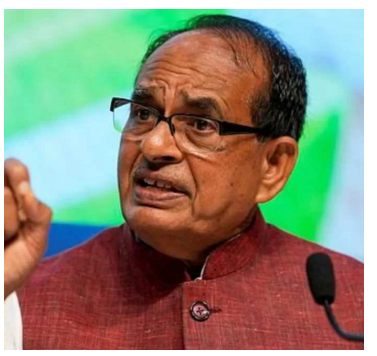

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मीडिया से चर्चा के दौरान कहा कि तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, उड़ीसा, असम, महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी जैसे नारियल उत्पादक राज्यों में किसान लंबे समय से उत्पादन, रोग, कीमत और वैल्यू. एडिशन की समस्याएँ उठा रहे थे। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की

किसान.हितैषी सोच और वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण की बजट घोषणा के तहत अब इन समस्याओं के समग्र समाधान के लिए 'नारियल प्रमोशन स्कीम' लाई जा रही है, जिसका उद्देश्य उत्पादकता बढ़ाना, लागत घटाना और किसानों की आय में स्पष्ट बढ़ोतरी करना है। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि इस योजना का मूल सिद्धांत हैदृ किसानों के बीच जाकर, उनकी भाषा में उनकी बात सुनकर नीति बनाना। उन्होंने उल्लेख किया कि इस कंसल्टेशन में तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम सहित कई भाषाओं में किसान बोले, इंटरप्रिटर ने अनुवाद किया और पूरा हॉल एक "लघु भारत" की तरह दिख रहा था, जहाँ विविध भाषाओं के बीच भी किसानों की चिंता और आकांक्षा एक ही थी। श्री चौहान ने इसे अखंड भारत की सजीव झलक बताया।

श्री शिवराज सिंह ने बताया कि किसानों और स्टेकहोल्डर्स से मिले

■ शेष पेज 2...

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

शेष पेज 1 से.....

भारत की राष्ट्रपति...

प्रस्तुत करेंगे। राष्ट्रपति ने कहा कि इस समय शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करना सबसे ज़रूरी है। आदिवासी युवाओं को शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से प्रगति करनी चाहिए। लेकिन इन सभी प्रयासों में उन्हें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें अपनी भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने, शिक्षा को प्राथमिकता देने और समाज में एकता और भाईचारा बनाए रखने का संकल्प लेना चाहिए। इससे हमें एक सशक्त समाज और एक मजबूत भारत के निर्माण में मदद मिलेगी।

आईएनएस तरंगिणी ...

के दौरान, जहाज श्रीलंका नौसेना के साथ विभिन्न द्विपक्षीय प्रशिक्षण गतिविधियां आयोजित करेगा। व्यावसायिक आदान–प्रदान के अलावा, दोनों नौसेनाओं के चालक दल मैत्रीपूर्ण खेल प्रतियोगिताओं, संयुक्त योग सत्रों और जागरूकता गतिविधियों में भाग लेंगे।

इससे पहले, त्रिंकोमाली में, श्रीलंका नौसेना एवं समुद्री अकादमी के कमांडेंट कमोडोर दिनेश बंडारा ने जहाज का दौरा किया और चालक दल तथा सवार श्रीलंका नौसेना सी राइडर्स के साथ बातचीत की। यह प्रशिक्षण तैनाती भारत–श्रीलंका समुद्री संबंधों के बढ़ते अध्याय के रूप में कार्य करती है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने...

है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से सीमित भूजल संसाधनों, खारे पानी की घुसपैठ और मौसमी बारिश पर निर्भरता जैसी चुनौतियों का सामना करता रहा है। यह तकनीक लगभग 350 से 400 मीटर की गहराई से मिले ठंडे गहरे समुद्र के पानी और गर्म सतही जल के बीच प्राकृतिक तापमान अंतर का इस्तेमाल कर समुद्री जल को पीने योग्य पानी में बदलती है।

मंत्री जी ने संयंत्रों के कार्यान्वयन प्रदर्शन की समीक्षा की और केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन के अंतर्गत प्रशिक्षित स्थानीय कर्मचारियों के सहयोग से किए जा रहे रखरखाव कार्यों पर चर्चा की। अधिकारियों ने जानकारी दी कि खारे पानी को मीठा बनाकर उपलब्ध कराने से द्वीपों में सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता में सुधार हुआ है और वर्षा जल संचयन प्रणालियों पर निर्भरता कम हुई है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कवरत्ती में तैयार किए जा रहे देश के पहले ओटीसी–संचालित विलवणीकरण संयंत्र में हुई प्रगति की भी समीक्षा की। इस परियोजना का उद्देश्य समुद्र के प्राकृतिक तापीय अंतर का इस्तेमाल कर एक साथ बिजली और पीने योग्य पानी का उत्पादन करना है। मंत्री जी को जानकारी दी गई कि संयंत्र का सिविल निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है और प्रमुख प्रक्रिया उपकरण पहले ही निर्मित हो चुके हैं, जिनकी स्थापना चरणबद्ध तरीके से की जा रही है।

समीक्षा में ओटीसी प्रणाली के लिए 1,000 मीटर से अधिक की गहराई से ठंडा समुद्री जल निकालने के लिए तैयार की गई लगभग 3.8 किलोमीटर लंबी उच्च घनत्व वाली पॉलीइथिलीन पाइपलाइन की तैनाती पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। एनआईओटी के अधिकारियों ने मंत्री को सूचित किया कि कवरत्ती खाड़ी के दक्षिणी किनारे पर पाइपलाइन के खंडों की वेल्डिंग का काम फिलहाल जारी है, और लगभग 250 मीटर पाइपलाइन पहले ही लगा दी गई है। यह पाइपला. इन गहरे समुद्र के ठंडे पानी को तटवर्ती संयंत्र तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका निभाएगी, जिससे विलवणीकरण प्रक्रिया और बिजली उत्पादन संभव हो सकेगा।

अधिकारियों के अनुसार, एक बार शुरू हो जाने पर, इस संयंत्र की विलवणीकरण क्षमता प्रतिदिन लगभग 100 घन मीटर पीने योग्य जल की होगी और यह डीजल आधारित बिजली पर निर्भर नहीं रहेगा, जो वर्तमान में द्वीपों के अधिकांश इंफ्रास्ट्रक्चर को बिजली प्रदान करती है। इस परियोजना से ईंधन पर निर्भरता कम होने के साथ–साथ द्वीप समुदाय की दीर्घकालिक ऊर्जा और जल की जरूरतों को पूरा करने की उम्मीद है।

समीक्षा के दौरान, मंत्री जी ने द्वीप और तटीय क्षेत्रों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों का समाधान करने वाली स्वदेशी समुद्री प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहन देने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने परियोजना में शामिल वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के साथ भी चर्चा की और कार्यान्वयन के बाकी चरणों की समय–सीमा की समीक्षा की।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने जानकारी दी कि एलटीटीडी सुविधाओं और आगामी ओटीईसी–संचालित विलवणीकरण संयंत्र की संयुक्त प्रगति द्वीपीय क्षेत्रों में संपोषित विकास के लक्ष्यों के साथ समुद्री विज्ञान को एकीकृत करने की दिशा में एक कदम है। एक बार शुरू हो जाने पर, इन पहलों से जल सुरक्षा को और मजबूत करने के साथ–साथ उष्णकटिबंधीय समुद्री वातावरण में स्वच्छ ऊर्जा के मौकों की खोज करने की उम्मीद है।

चेन्नई में नारियल...

प्रमुख सुझावों में रोग.प्रतिरोधी किस्मों का विकास, क्लस्टर.आधारित खेती, एफपीओ और कोऑपरेटिव मॉडल को मजबूत करना, नारियल तुड़ाई से लेकर गिरी निकालने तक मशीनीकरण को बढ़ावा देना और वाइट.फ्लाई जैसी बीमारियों के लिए केमिकल के बजाय जैविक नियंत्रण की दिशा में बढ़ना शामिल रहा। किसानों ने नारियल.आधारित इंटीग्रेटेड फार्मिंग, कोको, काली मिर्च, डेयरी और मत्स्य.पालन को जोड़कर मल्टी.इनकम मॉडल बनाने और नारियल के हर हिस्से से वैल्यू.एडिशन (तेल, कोयर, कार्बन आदि) बढ़ाने की मांग भी रखी।

उन्होंने बताया कि एक अहम सुझाव सार्वजनिक वितरण प्रणाली (च्वै) से जुड़ा था, जिसमें किसानों ने कहा कि यदि अन्य खाद्य तेलों के साथ नारियल तेल को भी च्वै में शामिल किया जाए तो नारियल की मांग स्थिर रहेगी और किसानों को बेहतर दाम मिल सकेंगे। श्री चौहान ने बताया कि नारियल विकास बोर्ड पहले ही सभी राज्य सरकारों को पत्र लिखकर च्वै में नारियल तेल को स्थान देने का आग्रह कर चुका है और अब राज्यों से प्रतिक्रिया व संवाद की प्रक्रिया चल रही है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान पत्रकारों ने तमिलनाडु में प्रधानमंत्री आवास योजना (च्ड।ल) और मनरेगा के क्रियान्वयन पर भी सवाल उठाए। इस पर केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि केंद्र की अपेक्षा स्पष्ट हैदृ प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत स्वीकृत मकानों को समय पर मंजूरी और निर्माण मिलना चाहिए ताकि कोई भी गरीब बिना पक्के मकान के न रहे। उन्होंने बताया कि तमिलनाडु में 2024.25 में स्वीकृत होने वाले लगभग दो लाख मकानों के प्रस्ताव लंबित हैं और नई सर्वे प्रक्रिया देशभर में पूरी हो चुकी है, इसलिए तमिलनाडु में भी इसे शीघ्र आगे बढ़ाया जाना चाहिए। सवाल पूछे जाने पर केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के मकान 2 साल में 2 लाख से ज्यादा मकान हमने दिए कि गरीबों को मकान दो। यहाँ की स्टेट गवर्नमेंट स्वीकृत नहीं कर रही है। गरीबों को घरों से क्यों वंचित कर रहे हो? 2 लाख गरीबों को मकान मिलते तो उनकी जिंदगी बदलने का काम होता।

मनरेगा पर पूछे गए सवाल के जवाब में केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि योजना का उद्देश्य ग्रामीण गरीबों के लिए रोज़गार और संपत्ति.निर्माण दोनों है, लेकिन यदि तीन लाख से ज्यादा शिकायतें आ रही हों तो यह जरूरी है कि राज्य सरकार गंभीरता से जांच करें, गड़बड़ी करने वालों पर कार्रवाई करें और धन के अपव्यय को रोके। सोशल ऑडिट से गड़बड़ी का पता लगा है। एक ही काम बार–बार कर दिया गया है, झूठे पेमेंट हो गए हैं, मजदूरों से नहीं मशीनों से काम हो रहा है, ऐसे काम लिए गए हैं, जैसे नहर की सफाई के काम जो बार–बार लेकर पैसा निकाल लिया गया है और यह बहुत बड़ी राशि है, करोड़ों रुपए जिसको हमने कहा कि ये वसूली जाए, ये गड़बड़ हुई है और गड़बड़ करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए, कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस तरह की चीजें होती हैं तो फिर मन में तकलीफ स्वाभाविक है। ऐसी शिकायतें कई योजनाओं के अंदर मिली हैं।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि आरोप–प्रत्यारोप से विकास का काम नहीं होता है। फेडरल स्ट्रक्चर में राज्य और केंद्र को मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने साफ कहा कि केंद्र की योजनाएँ ज़मीन पर जितनी ईमानदारी से लागू होंगी, उतनी ही तेजी से गांव.देहात की तस्वीर बदलेगी।

उर्वरक आपूर्ति पर एक सवाल के जवाब में कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि वैश्विक परिस्थितियों, खासकर युद्ध और भू.राजनीतिक तनावों का असर उर्वरक बाज़ार पर पड़ता है, लेकिन केंद्र सरकार स्थिति पर लगातार नज़र रखे हुए है और वैकल्पिक स्रोतों, दीर्घकालिक कॉन्ट्रैक्ट्स और घरेलू उत्पादन क्षमता बढ़ाने जैसे सभी विकल्पों पर सक्रिय रूप से सरकार काम कर रही है। उन्होंने आश्वासन दिया कि किसान हितों की रक्षा के लिए जो भी संभव कदम होंगे, केंद्र उन्हें उठाने में पीछे नहीं रहेगा।

चक्रवात और प्राकृतिक आपदाओं से नारियल बागानों को होने वाले नुकसान पर केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि फसल बीमा योजना और आपदा राहत तंत्र को इस तरह मजबूत किया जा रहा है कि किसान पूरी तरह सुरक्षित महसूस करें। उन्होंने कहा कि 'नारियल प्रमोशन स्कीम' के ड्राफ्ट में भी रिस्क.मैनेजमेंट और बीमा कवरेज को एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में शामिल किया जाएगा।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि इस नई योजना का व्यापक लक्ष्य तीन स्तर पर काम करना हैदृ फूड सिक्योरिटी, पोषण सुरक्षा और किसानों की बढ़ी हुई आय।

उन्होंने विश्वास जताया कि किसानों, विशेषज्ञों और राज्य सरकारा. ं के साथ मिलकर तैयार की जा रही 'नारियल प्रमोशन स्कीम' भारत को नारियल, काजू, कोको और कोयर उत्पादों के क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी बनाएगी और नारियल किसान भाइयों.बहनों के जीवन में "वास्तविक परिवर्तन" लेकर आएगी।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने उत्तराखंड सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने पर हरिद्वार में रू 1132 करोड़ से अधिक के विभिन्न जनकल्याणकारी कार्यों का लोकार्पण और भूमि पूजन किया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आज उत्तराखंड सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने पर हरिद्वार में घ्132 करोड़ से अधिक के विभिन्न जनकल्याणकारी कार्यों का लोकार्पण और भूमि पूजन किया।

इस अवसर पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और केन्द्रीय मंत्री श्री अजय टम्टा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि आज न सिर्फ उत्तराखंड में मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी की सरकार के चार साल पूरे होने के साथ राज्य में हमारी पार्टी की सरकार के 9 साल भी पूरे हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक जमाना था जब देवभूमि उत्तराखंड अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत था। उत्तराखंड को अलग राज्य बनाकर इसे अलग पहचान दिलाने और उत्तराखंड की संस्कृति को बचाने के लिए उत्तराखंड के युवा मैदान में उतरे थे। श्री शाह ने कहा कि उस वक्त मौजूदा विपक्षी पार्टियों ने उत्तराखंड के युवाओं पर असहनीय दमन किया था। अनेक युवाओं को गोली लगी और कई ने बलिदान दिया। रामपुर तिराहे की घटना आज भी उत्तराखंडवासी भूले नहीं हैं। गृह मंत्री ने कहा कि हमारे नेता और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उत्तराखंड को अलग राज्य बनाने का काम किया।

श्री अमित शाह ने कहा कि जब उत्तराखंड को अलग राज्य बनाया गया, तब विपक्षी पार्टी के नेता कहते थे कि छोटे राज्य कैसे टिकेंगे और इनकी अर्थव्यवस्था कैसे चलेगी। उन्होंने कहा कि अटल जी ने उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और झारखंड के रूप में तीन छोटे राज्य बनाए और आज तीनों राज्य विकास की राह पर आगे बढ़ चुके हैं। श्री शाह ने कहा कि अटल जी ने उत्तराखंड को बनाया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सँवारने का काम किया। उन्होंने कहा कि बीते नौ साल उत्तराखंड के विकास के नौ स्वर्णिम साल रहे हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि बीते चार साल में मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी ने राज्य की एक–एक समस्या को चुन–चुन कर समाप्त करने का रचनात्मक प्रयास किया है। इसके कारण आज उत्तराखंड विकास के रास्ते पर 'दिन दूनी रात चौगुनी' गति से बढ़ रहा है।

श्री अमित शाह ने कहा कि आज 1132 करोड़ रुपए से अधिक के विभिन्न जनकल्याणकारी कार्यों का लोकार्पण और भूमि पूजन हुआ है। नई न्याय सं. हताओं पर प्रदर्शनी भी आयोजित की गई है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए 150 साल पुराने कानून को समाप्त कर नई न्याय संहिताएं बनाई गई हैं। केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि नए कानून 2028 तक पूरी तरह लागू कर दिए जाएंगे। इसके बाद एफआईआर दर्ज होने से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक की न्यायिक प्रक्रिया 3 साल में पूरी हो जाएगी और समय पर न्याय मिलेगा। उन्होंने कहा कि ये दुनिया की सबसे आधुनिक और सबसे वैज्ञानिक न्याय संहिताएं हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि आज उत्तराखंड के 1900 युवाओं को पुलिस कांस्टेबल की नौकरी मिली है।

उन्होंने इन युवाओं से सवाल किया कि अगर विपक्षी पार्टी की सरकार होती तो क्या उन्हें यह नौकरी मिल पाती? श्री शाह ने कहा कि विपक्षी पार्टी की सरकार होती तो नौकरी के लिए पर्ची भी चाहिए होती और खर्ची भी लगती। लेकिन अब इनकी कोई जरूरत नहीं है। श्री शाह ने कहा कि पहाड़ पर रहने वाली किसी बूढ़ी मां का बेटा बगैर किसी सिफारिश के आज नौकरी प्राप्त कर अपने घर जा रहा है। इसे ही सुशासन कहते हैं। गृह मंत्री ने यह भी कहा कि राज्य सरकार द्वारा बनाए गए नकल विरोधी कानून ने रोजगार के क्षेत्र में पारदर्शिता लाने का काम किया है।

श्री अमित शाह ने कहा कि आज पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आए 162 लोगों को भारत की नागरिकता दी गई। उन्होंने कहा कि जब वे सीएए कानून लेकर आए थे, तब विपक्षी पार्टियों के नेताओं ने संसद में खूब हो–हल्ला किया था।श्री शाह ने कहा कि वे आज फिर से कहना चाहते हैं कि बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान से आए हिन्दू, सिख, बौद्ध और जैन शरणार्थियों का इस देश पर उतना ही अधिकार है जितना इस देश पर यहाँ के नागरिकों का अधिकार है।

अर्थव्यवस्था का एक नया नजरिया : भारत के जीडीपी के आधार में संशोधन को समझना

श्री सौरभ गर्ग

सकल घरेलू उत्पाद या जीडीपी किसी देश की अर्थव्यवस्था के आकार और उसकी सेहत को आंकने का एक तरीका है। यह एक राष्ट्र का वह रिपोर्ट कार्ड है, जो हमें बताता है कि वह देश वस्तुओं और सेवाओं के लिहाज से कितना उत्पादन कर रहा है। जब जीडीपी बढ़ रही होती है, तो आमतौर पर इसका मतलब होता है कि कारोबार जगत वस्तुओं एवं सेवाओं का अधिक उत्पादन कर रहा है, अधिक संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है और आय बढ़ रही है। वैश्विक स्तर पर भी जीडीपी का बेहद महत्व होता है। वर्तमान में भारत विश्व की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है और अनुमान है कि 2030 तक यह तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी।

अर्थव्यवस्था को मापने के एक साधन के रूप में, जीडीपी को अर्थव्यवस्था की सही नब्ज को पहचान. ने के उद्देश्य से नियमित रूप से संशोधित करते रहने की जरूरत होती है। इस काम को बदलती अर्थव्यवस्था के साथ तालमेल बनाए रखने के इरादे से जीडीपी के आधार वर्ष को नियमित अंतराल पर अद्यतन करके पूरा किया जाता है। जैसे– जैसे अर्थव्यवस्था के स्वरूप बदलता जाता है और नए उद्योग उभरते हैं, उपभोग के पैटर्न बदलते हैं तथा आंकड़ों के नए स्रोत विकसित होते हैं, इन संशोधनों से आधिकारिक आंकड़ों को असली हकीकतों के अनुरूप ढालने में मदद मिलती है और अनुमान अधिक सटीक व ठोस बन जाते हैं।

आधार में पिछले संशोधन के बाद से आंकड़ों के नए स्रोतों की उपलब्धता ने हमें जीडीपी में अलग–अलग सेक्टरों और अलग–अलग क्षेत्रों के योगदानों को अधिक स्पष्ट रूप से देखने और बेहतर तरीकों को अपनाने में मदद की है। उदाहरण के लिए, अनौपचारिक क्षेत्र को भी व्यापक रूप से कवर करने वाले गैर–निगमित क्षेत्र द्वारा मूल्य वर्धन का अनुमान लगाने में संदर्भ में।

जीडीपी के आधार में पिछले संशोधन के बाद से, कंपनियों के प्रबंधन एवं प्रशासन संबंधी आंकड़े (एमजीटी–7/7ए) जैसे कुछ नए किस्म के आंकड़े उपलब्ध हुए हैं।

ये आंकड़े कंपनियों द्वारा की जाने वाली व्यावसायिक गतिविधियों की संख्या, एनआईसी 2008 के अनुसार व्यावसायिक गतिविधि के विवरण और प्रत्येक वर्ष प्रत्येक व्यावसायिक गतिविधि (उद्योग) से प्राप्त प्रतिशत कारोबार (टर्नओवर) की जानकारी प्रदान करते हैं।

इसलिए, आधार का पुनर्निर्धारण करते समय बहु–गतिविधियों वाले उद्यमों के लिए मूल्यवर्धन को अब पहले की तरह पूरी तरह से मुख्य गतिविधि को आवंटित करने के बजाय नए उपलब्ध एमजीटी–7 के आंकड़ों के आधार पर विभिन्न गतिविधियों में आवंटित किया जाता है।

इस बदलाव से हमें अलग–अलग सेक्टरों के योगदानों को अधिक सटीक रूप से समझने में मदद मिलती है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक व्यावसायिक गतिविधि अर्थव्यवस्था को किस प्रकार संचालित कर रही है।

जिस प्रकार कंपनी स्तर के नए आंकड़े हमें अलग–अलग सेक्टरों के योगदानों को अधिक सटीक रूप से मापने में मदद करते हैं, ठीक वैसे ही नई श्रृंखला में जीएसटी आंकड़ों के बेहतर उपयोग से अन्य बातों के अलावा, निजी कॉरपोरेट सेक्टर से संबंधित क्षेत्रीय आवंटन में सुधार और राज्य स्तर पर व्यय–पक्ष के अनुमानों के बेहतर संकलन के जरिए जीडीपी में क्षेत्रीय योगदानों का अधिक सटीक और सूक्ष्म दृष्टिकोण हासिल होता है।

एएसयूएसई और पीएलएफएस जैसे सर्वेक्षणों से हासिल वार्षिक आंकड़ों की उपलब्धता, जिसकी सुविधा पहले नहीं थी, ने हमें गैर–निगमित क्षेत्र द्वारा वार्षिक रूप से मूल्यवर्धन का अनुमान लगाने की एक बेहतर पद्धति अपनाने में समर्थ बनाया है। पहले हम अन्य संकेतकों से अप्रत्यक्ष रूप से जीडीपी में इसके योगदान का अनुमान लगाते थे। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि लाखों घरेलू व्यवसायों, छोटी दुकानों और स्वरोजगार श्रमिकों से मिलकर बना यह सेक्टर अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है और रोजगार एवं आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जीडीपी के आधार में संशोधन महज आंकड़ों के नए स्रोतों के उपयोग से कहीं आगे की बात है। यह कार्यप्रणाली में सुधार से भी जुड़ा है और इस संदर्भ में, जीडीपी की नई श्रृंखला में कई कार्यप्रणालीगत सुधार देखे गए हैं।

पहले, कीमतों में बदलाव के अनुसार जीडीपी को समायोजित करने की दोहरी अपस्फीति (डबल डिफ्लेशन) विस्तृत विधि सिर्फ कृषि क्षेत्र में ही लागू होती थी। वर्ष 2022–23 की नई श्रृंखला में दोहरी अपस्फीति विधि का विस्तार करके इसे मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र तक ले आया गया है, जहां अब पर्याप्त आंकड़े उपलब्ध हैं और अन्य सभी क्षेत्रों में एकल बहिर्वेशन (सिंगल एक्सट्रपलेशन)/ मात्रात्मक बहिर्वेशन (वॉल्यूम एक्सट्रपलेशन) विधि का उपयोग किया जाता है। यह दृष्टिकोण उपलब्ध आंकड़ों का सर्वोत्तम उपयोग करता है, जिससे अनुमान सटीक और विश्वसनीय बने रहते हैं।

दोहरी अपस्फीति में बहुत अधिक आंकड़ों की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके लिए आउटपुट और इनपुट दोनों की कीमतों पर विस्तृत जानकारी की जरूरत होती है। जैसे–जैसे समय के साथ यह आंकड़ा और अधिक उपलब्ध होता जाएगा, हम इसके उपयोग का विस्तार और अधिक क्षेत्रों में कर सकेंगे।

कार्यप्रणाली की दृष्टि से एक उल्लेखनीय सुधार यह है कि अर्थव्यवस्था के अनुमानों को उत्पादित वस्तुओं (उत्पादन पक्ष) और लोगों एवं कारोबार जगत द्वारा किए गए व्यय (खर्च पक्ष) के आधार पर ढाला गया है। ये दोनों पक्ष अक्सर पूरी तरह से मेल नहीं खाते, जो कि दुनिया के तमाम देशों में और खासकर तिमाही जीडीपी के मामले में, एक आम समस्या है। इस समस्या को दूर करने के उद्देश्य से नई श्रृंखला में 'आपूर्ति एवं उपयोग सारणी' के ढांचे का उपयोग किया जा रहा है ताकि प्रारंभिक अनुमानों में विसंगतियों को सीमित किया जा सके और अंतिम अनुमानों के समय पूरे आंकड़े उपलब्ध होने पर उन्हें पूरी तरह से दूर किया जा सके।

जीडीपी के आंकड़ों को अद्यतन करना अर्थव्यवस्था को और भी स्पष्ट नजरिए से देखने जैसा है। हर आर्थिक गतिविधि, चाहे छोटी हो या बड़ी, स्पष्ट रूप से सामने आती है और राष्ट्र के विकास में उसके योगदान का सटीक तरीके से उजागर होता है। बेहतर आंकड़ों का उपयोग करके, विधियों को परिष्कृ त करके और अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों के अनुरूप ढलकर, मंत्रालय ने अर्थव्यवस्था को और भी स्पष्ट रूप से पेश किया है।

नागरिकों के लिए इसका मतलब यह है कि अब नीतियां एवं सार्वजनिक सेवाएं अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली की सटीक समझ पर आधारित हैं, जिससे विकास का असर सिर्फ कागजों पर ही नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में भी महसूस हो रहा है।

(लेखक सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के सचिव हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)

एनएचए ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा एक्सचेंज (एनएचसीएक्स) से संबंधित नवाचार को बढ़ावा देने के लिए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत आयोजित एनएचसीएक्स हैकाथॉन के विजेताओं की घोषणा की

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा एक्सचेंज (एनएचसीएक्स) से संबंधित नवाचार को बढ़ावा देने के लिए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के तहत आयोजित एनएचसीएक्स हैकाथॉन का सफल संचालन किया। विजेता टीमों ने आईआईटी हैदराबाद में 6दृ7 मार्च 2026 को आयोजित एनएचसीएक्स इना. वेशन मीट में अपने समाधान प्रस्तुत किए, जहाँ उनके समाधानों का प्रदर्शन किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया। 6 और 7 मार्च 2026 को आयोजित इस दो दिवसीय कार्यक्रम में 22 फरवरी से 28 फरवरी 2026 के बीच आयोजित एनएचसीएक्स हैकाथॉन के ग्रैंड फिनाले का भी प्रतीकात्मक समापन किया गया।

इस हैकाथॉन का आयोजन विभिन्न इकोसिस्टम पार्टनर्स के सहयोग से किया गया, भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई), आईआईटी हैदराबाद, नेशनल रिसोर्स सेंटर फॉर ईएचआर स्टैंडर्ड्स (एनआरसीईएस), जनरल इंश्योरेंस काउंसिल (जीआईसी), गूगल, बीमा सूचना ब्यूरो (आईआईबी), अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएच), इंडिया इंश्योरटेक एसोसिएशन (आईआईए) और नैटहेल्थ शामिल थे।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा एक्सचेंज (एनएचसीएक्स), आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के तहत स्थापित तीन गेटवे में से एक है, जिसे पूरे देश में स्वास्थ्य बीमा दावा प्रक्रिया को सरल और मानकीकृत बनाने के लिए निर्मित किया गया है। यह अस्पतालों, बीमा कंपनियों और मरीजों के बीच दावे से जुड़ी जानकारी के सहज आदान–प्रदान के लिए एक एकीकृत डिजिटल अवसंरचना प्रदान करता है। इस हैकाथॉन में प्रतिभागियों को स्वास्थ्य बीमा दावों के संसाधन और इकोसिस्टम की अंतर–संचालनीयता से जुड़ी प्रमुख परिचालन चुनौतियों के समाधान विकसित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। हैकाथॉन (बिल्ड) ट्रैक के अंतर्गत प्रतिभागियों ने लीगेसी सिस्टम्स से एनएचसीएक्स –अलाइन एफएचआईआर कन्वर्टर (पात्रता की जांच, दावा, प्री–ऑथराइजेशन और कम्युनिकेशन वर्कफ्लो), क्लिनिकल डॉक्यूमेंट्स से

एफएचआईआर स्ट्रक्चर्ड डेटा कन्वर्टर (डायग्नोस्टिक रिपोर्ट्स और डिस्चार्ज समरी) तथा पीडीएफ से एनएचसीएक्स –अलाइन इंश्योरेंस प्लान एफएचआईआर बंडल के लिए ओपन–सोर्स यूटिलिटीज विकसित करने पर काम किया।

आइडियाथॉन ट्रैक के तहत प्रतिभागियों को एनएचसीएक्स की क्षमताओं का उपयोग करते हुए बिज़नेस यूज़ केस विकसित करने के लिए आमंत्रित किया गया, ताकि एनएचसीएक्स की क्षमताओं का उपयोग करके दुरुपयोग/गलत इस्तेमाल की पहचान और प्रबंधन तथा दावों की प्रोसेसिंग के समय और लागत का अनुकूलन करने जैसी इकोसिस्टम स्तर की चुनौतियों का समाधान किया जा सके। ये समस्या कथन स्वास्थ्य बीमा इकोसिस्टम में अंतर–संचालनीयता, दक्षता और पारदर्शिता को बेहतर बनाने के लिए मानकीकृत एफएचआईआर डेटा, एबीडीएम रजिस्ट्रियों और एनएचसीएक्स वर्कफ्लो का उपयोग कर समाधानों को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए थे। इस हैकाथॉन में स्वास्थ्य सेवा, बीमा और प्रौद्योगिकी इकोसिस्टम से व्यापक और उत्साहजनक भागीदारी देखने को मिली, जो भारत की डिजिटल स्वास्थ्य बीमा अवसंरचना के लिए अंतर–संच. ालनीय और मानक–आधारित समाधानों के निर्माण में बढ़ती रुचि को दर्शाता है।

पांच समस्या कथनों पर कुल 112 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिनका मूल्यांकन आईआईटी हैदराबाद, एनआरसीईएस, जीआईसी, गूगल, आईआईए, नैटहेल्थ और एनएचए के प्रतिनिधियों को शामिल कर गठित की गई एक स्वतंत्र विशेषज्ञ जूरी द्वारा किया गया।

हैकाथॉन के विभिन्न ट्रैकों में प्रत्येक समस्या कथन के लिए शीर्ष तीन टीमों का चयन किया गया। प्रतिभागियों में हेल्थ–टेक स्टार्टअप्स, इंश्योरटेक कंपनियां, बीमा कंपनियां, टीपीए, पीएमजेएवाई से सूचीबद्ध अस्पतालों सहित अस्पताल, एचएमआईएस विक्रेता, शैक्षणिक संस्थान, डेवलपर्स, छात्र और प्रौद्योगिकी नवोन्मेषक शामिल थे, जो वैविध्यपूर्ण और सहयोगात्मक नवाचार इकोसिस्टम को दर्शाता है। आईआईटी हैदराबाद में 6दृ7 मार्च 2026 को आयोजित एनएचसीएक्स इनोवेशन मीट ने नियामकों, राज्य सरकारों, उद्योग जगत के दिग्गजों, प्रौद्योगिकी नवोन्मेषकों और शैक्षणिक संस्थानों को एक मंच पर एकत्र किया, ताकि एबीडीएम के तहत अंतर–संचालनीय और मानक–अनुरूप स्वास्थ्य दावा समाधानों को अपनाने में मदद मिल सके।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

'विश्व मंच पर भारत की बदनामी कौन करा रहा है?'

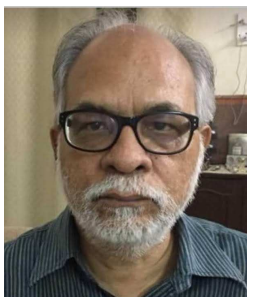

राजेन्द्र शर्मा

गजा के खिलाफ दो साल से लंबे अमेरिका–समर्थित इजराइली नरसंहार का दो–टूक विरोध करने की जगह, कभी हां और कभी ना से दोनों पक्षों को खुश रखने की कोशिश करने और वास्तव में, नरसंहार के शिकार और नरसंहार करने वाले, दोनों को एक ही पलड़े पर तोलने की कोशिश करने के जरिए, इजरा. इली–अमेरिकी नरसंहार की पीठ ही थपथपाने से भी प्रधानमंत्री मोदी को संतोष नहीं हुआ। ध्वस्त कराने के बाद गज़ा के पुनर्निर्माण के नाम पर पेश किए जा रहे, खुल्लमखुल्ला साम्राज्यवादी अचल संपत्ति प्रोजैक्ट को अंजाम देने के लिए, खुद ट्रम्प के नेतृत्व में गठित कथित पीस बोर्ड में बाकायदा शामिल होने–न होने से लेकर, फिलिस्तीनी इलाकों में जबरन यहूदी बस्तियां बसाए जाने की निंदा के संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव पर एक बार फिर, मोदी का भारत कभी हां कभी ना के झूले पर झूलता रहा। और जब एपस्टीन फाइलों के बढ़ते खुलासा. ˇ की बढ़ती गर्मी से बचने के लिए, ट्रंप–नेतन्याहू जोड़ी ने हैडलाइन बदलने के लिए ईरान के खिलाफ हमले की साफ तौर पर तैयारियां शुरू कर दीं, ऐन मौके पर प्रधानमंत्री मोदी को भारत के इजरायल के साथ खड़े होने का प्रदर्शन करने के लिए, इजरायल का दौरा करना जरूरी लगा।

और 28 फरवरी की दोपहर में, एक स्वतंत्र, संप्रभु तथा परंपरागत रूप भारत के मित्र देश, ईरान पर इजरायल–अमेरिका के संयुक्त हमले के बाद? एक स्वतंत्र देश पर और वहां श्शासन बदलवानेश या रिजीम चेंज के घोषित इरादे से, तमाम अंतर्राष्ट्रीय नियम–कायदों का उल्लंघन करते हुए, बिना किसी उकसावे के किए गए हमले के खिलाफ मोदी के भारत के मुंह से एक शब्द तक नहीं निकला कृ हमला करने वालों की निंदा को तो छोड़ ही दो, हमले की निंदा का भी एक भी शब्द। हां! विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी से, आम तौर पर शांति की अपील और प्रभावित देशों में भारतीय नागरिकों से सावधानी तथा आवश्यकता पड़ने पर दूतावास से संपर्क करने का परामर्श जारी कराने की खाना–पूरी पर ही संतोष कर लिया गया।

लेकिन, मोदी के भारत को हमलावर और हमले के शिकार के बीच, इस कथित श्तटस्थताश की मुद्रा से भी संतोष नहीं हुआ। अमेरिका–इजरायल ने हमले के पहले ही दिन, जब टार्गेटेड हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता तथा राष्ट्राध्यक्ष, अयातुल्ला खामनेई तथा कई सैन्य नेताओं की हत्या कर दी गयी और राष्ट्रपति ट्रंप ने इस श्बड़ी कामयाबीश के लिए बाकायदा गाल बजाना जरूरी समझा, मोदी के नये भारत ने इस पर पूरी तरह से चुप्पी ही साध ली।

यह इसके बावजूद था कि अयातुल्ला खामनेई सिर्फ पड़ोसी मित्र देश के राष्ट्राध्यक्ष ही नहीं थे, वह एशिया में शिया मुसलमानों के सबसे बड़े धर्मगुरु भी थे, जिसके चलते खुद भारत में भी शिया आबादी वाले उत्तर प्रदेश में ही नहीं, ज्यादा मुस्लिम आबादी वाले कश्मीर तथा देश के दूसरे अनेक हिस्सों में भी, बड़ी संख्या में लोग शोक जताने के लिए उमड़ पड़े थे। ये भावनाएं इसलिए और भी प्रबल थीं कि खामनेई की इजराइली–अमेरिकी हमले में लक्षित हत्या को जुल्म की ताकत के हाथों श्शहादतश के रूप में देखा जा रहा था और आम तौर पर इस्लामी परंपरा में और खासतौर पर शिया परंपरा में, श्शहादतश का मुकाम बहुत ऊंचा माना जाता है।

हैरानी की बात नहीं है कि खामनेई की श्शहादतश ने ईरानी जनता को जिस तरह अमेरिकी–इजराइली हमले के खिलाफ एकजुट किया है, उस तरह शायद खामनेई की मौजूदगी नहीं कर सकती थी। बहरहाल, प्रायरू हर चर्चित व्यक्ति की मृत्यु या जन्म दिन पर संदेश देने के लिए विख्यात, प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार ने, इस पूरे घटनाक्रम पर एक शब्द तक कहना जरूरी नहीं समझा।

दूसरी ओर, इस युद्घ से जुड़े घटनाक्रम पर मोदी का भारत चुप ही बना रहा। बेशक, उन्होंने अपना मुंह खोला, लेकिन एक प्रकार से यह स्पष्ट करने के लिए कि वह इस टकराव में किस की तरफ है। अमेरिकी–इजराइली हमले के जवाब में, जब ईरान ने इजरायल के अलावा अमेरिकी सैन्य ताकत के केंद्रों के तौर पर पश्चिम एशिया में कतर, कुवैत, जोर्डन, बहरीन, ओमान आदि में स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डों व अन्य ठिकानों को अपनी मिसाइलों तथा ड्रोनों से निशाना बनाया, इस क्रम में यूएई भी हमले की जद में आया था।

नरेंद्र मोदी ने इस तीखे टकराव के बीच, यूएई पर हमले (जाहिर है कि ईरानी) को ही श्कड़ी निंदाश के लायक समझा ; उसके नुकसान को ही शोक जताने लायक समझा ; उसके साथ एकजुटता जताने की जरूरत समझी!

इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी ने यूएई के राष्ट्रपति, जायेद अल नहयान को विशेष रूप से टेलीफोन किया था और बाद में उनसे हुई बातचीत की जानकारी बाकायदा सार्वजनिक भी की गयी।

इस सारे घटनाक्रम का किंचित विस्तार से जिक्र हमने यह ध्यान दिलाने के लिए किया है कि अमे. रिका–इजरायल जोड़ी की सामराजी युद्घोन्मादी मुहिम का पिछलग्गू बनाकर भारत को नरेंद्र मोदी ने उस मुकाम पर पहुंचा दिया है, जहां वह परोक्ष रूप से एक स्वतंत्र देश की (ईरान) की इस जोड़ी के अकारण हमले के खिलाफ बचाव की कार्रवाइयों की निंदा के जरिए, इस सामराजी मुहिम का ही समर्थन कर रहा है। याद रहे कि यह आक्रांता और हमले के शिकार, दोनों के बीच श्बराबरीश के पाखंड से नीचे गिरने का मामला है। यहां से आक्रांता का प्रत्यक्ष रूप से साथ देना, एक कदम ही दूर रह जाता है। इसमें से भी आधा कदम तो मोदी राज ने, सिर्फ और सिर्फ यूएई पर हमले को निंदनीय बताने के जरिए उठा भी लिया है।

कहने की जरूरत नहीं है कि यह साम्राज्यवादवि. रोधी स्वतंत्रता संघर्ष से निकली, भारत की साम्राज्यवाद के सामने स्वतंत्र नीति और साम्राज्यवाद से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही दुनिया के साथ एकजुटता की समूची नीति के ही त्यागे जाने का मामला नहीं है, जिसे मोदी राज के बारह वर्षों में गुटनिरपेक्ष आंदोलन से पूरी तरह से मुंह मोड़े जाने ने पहले ही निर्णायक बिंदु पर पहुंचा दिया था।

लेकिन, साम्राज्यवादविरोधी स्वतंत्रता संघर्ष से न सिर्फ दूर रहे, बल्कि उसकी जड़ें काटने में ही जुटे रहे, आरएसएसस के राजनीतिक मोर्चे के रूप में, भाजपा और उसकी सरकार से और उम्मीद भी क्या की जा सकती थी।

लेकिन, यह तो और आगे बढ़कर, स्वतंत्र विदेश नीति के ही पलटे जाने और विकासशील दुनिया के खिलाफ साम्राज्यवादी हुकुमशाही के खेमे के साथ जा मिलने का मामला है।

जाहिर है कि यह सब करते–कराते हुए, जब–तब विकासशील दुनिया या ग्लोबल साउथ का मुखिया होने के अपने मुंह से खुद ही दावे करने से, मोदी के भारत को प्रतिष्ठा नहीं मिलती है। उलटे सच्चाई यह है कि न सिर्फ विकासशील दुनिया ने मोदी के भारत को अपना मानना बंद कर दिया, जिसका पता पर्यावरण से लेकर विश्व व्यापार तक, अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर वार्ताओं में लगातार मिलता रहा है, बल्कि एक दुरंगे चरित्र के रूप में मोदी का भारत बदनाम हो रहा है। पहले गज़ा और अब ईरान पर अमे. रिकी–इजराइली हमला, भारत की बदनामी के बड़े मौके बन गए हैं। विश्व एआई समिट के दौरान दो–दर्जन युवाओं के बनियान/ टीशर्ट में प्रदर्शन पर तो दुनिया की शायद ही कोई नजर पड़ी हो, पर स्वतंत्र भारत की सम्मानित विदेश नीति और उसके बुनियादी मूल्यों से मोदी राज की यह पल्टी जरूर, आम तौर पर दुनिया भर में और खासतौर पर विकासशील दुनिया में भारत का नाम बदनाम करा रही है।

और मोदी राज के दुर्भाग्य से यह भी गुनाह बेलज्जत का मामला है। कम से कम ट्रंप के राज के एक साल से ज्यादा में यह सब करने का भी भारत को जो नतीजा मिला है, इसी को दिखाता है। यह कोई संयोग ही नहीं है कि ट्रंप निजाम ने, भारत पर सबसे ज्यादा टैरिफ थोपा था और बाद में उसी टैरिफ को हथियार बनाकर, उसने भारत पर एक ऐसा असमानतापूर्ण व्यापार समझौता थोप दिया है, जो न सिर्फ भारत के अपने आर्थिक हितों को चोट पहुंचाने वाला समझौता है, बल्कि एक ऐसा समझौता भी है, जो इस असमानता के साथ, अमेरिका की मर्जी की नीतियों पर चलने की शर्तों का योग करता है। यह भारत की संप्रभुता के गिरवी रखे जाने को संस्थागत रूप देने वाले समझौतों का रास्ता है। इस तरह, तथाकथित व्यावहारिकता के तर्क से वास्तव में भारत को अपनी स्वतंत्रता तथा संप्रभुता में कतरब्यौंत को स्वीकार करने के ही रास्ते पर धकेला जा रहा है। क्या यह एक स्वतंत्र देश के लिए बदनामी का ही रास्ता नहीं है?

आखिर में एक बात और। अब जब सारी दुनिया में, बाल यौन उत्पीड़क दरिंदे एपस्टीन की फाइलों के खुलासों के असर से इस्तीफों से लेकर गिरफ्तारियां तक हो रही हैं और तरह–तरह के कदम उठाए जा रहे हैं, भारत में मोदी सरकार का रुख हरदीप पुरी से लेकर, अनिल अंबानी तक के नाम आने के बावजूद, एक प्रकार से क्लीन चिट देने का ही नजर आता है। क्या एक दरिंदे के साथ संपर्कों का इस तरह सामान्य बनाया जाना, दुनिया भर में भारत की बदनामी नहीं करा रहा है?

'(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका श्लोकलहरश के संपादक हैं।

पश्चिम बंगाल का 2026 का बजट : ममता के उदार दोस्त क्या मानने से इंकार कर रहे हैं?'

(आलेख : अर्का राजपंडित, अनुवाद : संजय पराते)'

पश्चिम बंगाल के 2026–27 के बजट को, 'बंगाल का गौरव' नाम दिया गया है। यह बजट 4.06 लाख करोड़ रुपये का है। इस बजट का रोडमैप, एक ऐसी सरकार के पंद्रह साल पूरे होने का प्रतीक है, जिसकी सावधानीपूर्वक यह छवि बनाई गई है कि यह सरकार गरीबपरस्त है और प्रगतिशील सोच रखती है। इस बात को ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस सरकार को समर्थन करने वाले एक उदार नेटवर्क ने आगे बढ़ाया है, जो राज्य के नकद हस्तांतरण मॉडल को नव–उदारवाद के खिलाफ एक बड़ा मूलगामी विरोध बताता है।

फिर भी, यह दिखावा टूट रहा है। निम्न वर्ग की जीत दिखाने के बजाय, ये कल्याणकारी कार्यक्रम सिर्फ़ ज़िंदा रहने के लिए राहत देते हैं, और एक आत्मनिर्भर उत्पादक अर्थव्यवस्था बनाने में गहरी नाकामी को छिपाते हैं। इस प्रगतिशील ब्रांडिंग का असल में मज़दूर वर्ग और किसानों की कठिनाईयों से कोई लेना–देना नहीं है।

पश्चिम बंगाल के लिए 2026–27 के राजकोषीय रोडमैप से पता चलता है कि अर्थव्यवस्था संरचनात्मक निर्भरता और राजकोषीय भंगुरता के चक्र में फंसी हुई है। 21.48 लाख करोड़ रूपये के जीएसडीपी के मुकाबले 2,87,792 करोड़ रूपये की कुल राजस्व प्राप्ति के अनुमान के साथ, राज्य की वित्तीय आमद स्थानीय करारोपण और केंद्रीय करों में हिस्सेदारी पर लगभग उतनी ही निर्भरता के बीच झूल रही है। यह अनुरूपता एक ठहरे हुए अंदरूनी राजस्व आधार को दिखाती है, जो स्वतंत्र रूप से अपनी परिसंपत्ति का निर्माण करने में राज्य की नाक. ामी को रेखांकित करता है। जबकि सरकार राजस्व घाटे में 21,759 करोड़ रूपये की नाटकीय कमी का दावा करती है, ऐसे अनुमान अक्सर कर्ज़ से संचा. लित राज्य होने की कड़वी सच्चाई को छिपाते हैं। बाजार से 80,445 करोड़ रूपये के चौंका देने वाले उधार का अनुमान लगाकर, प्रशासन मौजूदा कमजोरियों की भरपाई के लिए राज्य के भविष्य को गिरवी रख रहा है।

राज्य सामाजिक कल्याण के कार्यों पर 1.80 लाख करोड़ रुपये (बजट का लगभग 45:) खर्च कर रहा है, जिसमें लक्ष्मीर भंडार को 15,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाना भी शामिल है, ताकि निजी श्रम बाजार की नाकामी की भरपाई के लिए सामाजिक मजदूरी दी जा सकें। नव–उदारवादी दौर में, ये सुरक्षा ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी हैं, लेकिन जब इसे उत्पादन की ताकतों (उद्योग और प्रौद्योगिकी) के विकास के साथ नहीं जोड़ा जाता ; तो ये गरीबी को खत्म करने के बजाय उसे प्रबंधित करने का एक तरीका बन जाती हैं। उद्योग और एमएसएमई के लिए बहुत कम आबंटन (बजट का 1: से भी कम) यह सुनिश्चित करता है कि मज़दूर वर्ग श्रम की एक आरक्षित सेना बनी रहे, जिन्हें उत्पादक रोज़गार के बजाय पलायन करने या राज्य से मिलने वाले पैसे पर गुज़ारा करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

पूंजीगत व्यय के लिए 86,533 करोड़ रूपये आबंटित किए गए हैं, जो एक मज़बूत अधोसंरचना के निर्माण की योजना बनाने के लिए नाकाफी है। यह एक चूका हुआ विचार लगता है, जो बंगाल के उद्योगों और खेती–बाड़ी को बढ़ावा देने के लिए नाकाफी है, जो कि बंगाल को एक नियमित गुज़ारे लायक अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए ज़रूरी है।

'वह असलियत, जिसे ममता के उदार दोस्त छिपा नहीं सकते'

पश्चिम बंगाल बहुत ज़्यादा आर्थिक उतार–चढ़ाव से ग्रस्त है। यह एक ऐसी कड़वी सच्चाई है, जिसे बताने में ममता बनर्जी के उदार दोस्त अक्सर नाकाम रहे हैं। 2025–26 में, राज्य की प्रति व्यक्ति आय लगभग 1,71,184 रूपये थी, जो 2.12 लाख रूपये के राष्ट्रीय औसत से लगभग 20: कम है। यह

अंतर प्रति व्यक्ति जीडीपी के मामले में पश्चिम बंगाल को भारत में 21वें स्थान पर रखता है, जिससे यह दक्षिणी और पश्चिमी भारत के औद्योगिक महाश. क्तियों से काफी पीछे रह जाता है।

घर–परिवारों के वित्तीय स्वास्थ्य की हालत भी उतनी ही चिंता की बात है, क्योंकि आरबीआई के हाल ही के आंकड़ों से पता चलता है कि 2019 और 2025 के बीच इस राज्य में सालाना वित्तीय देनदारी में 102: की बढ़ोतरी हुई है। इसके उलट, वित्तीय संपत्ति में सिर्फ़ 48: की बढ़ोतरी हुई है, जिसका मतलब है कि हर 1 रूपये की बचत पर, कर्ज़ लगभग 2 रूपये बढ़ रहा है। यह असंतुलन इस बात से और साफ़ होता है कि पश्चिम बंगाल पर, अब देश में सबसे ज़्यादा सूक्ष्म वित्त (एमएफआई) कर्ज बकाया है। कई ग्रामीण परिवारों के लिए, बचत अब संपत्ति निर्माण के लिए नहीं है, बल्कि हर हफ़्ते या महीने में एमएफआई का पुनर्भुगतान करने के लिए होती है।

स्वास्थ्य देखभाल और कर्ज तक पहुंच में संकट की वजह से कर्ज़ का यह चक्कर और बढ़ गया है। 2025–26 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि पश्चिम बंगाल में वित्तीय तनाव के सबसे ज़्यादा मामले हैं, जिससे परिवारों को हॉस्पिटल में भर्ती होने के खर्च के लिए अपनी संपत्ति बेचनी पड़ती है या भारी कर्ज़ लेना पड़ता है। नतीजतन, सोने को गिरवी रखकर कर्ज लेना (गोल्ड लोन) आखिरी उपाय से बदलकर घरेलू कर्ज़ का मुख्य चालक बन गया है ; 2025 के आखिर तक, ये ऋण साल–दर–साल 125: तक बढ़ गए हैं। यह बढ़ोतरी ज़्यादातर सोने की रिकॉर्ड ऊँची कीमतों के कारण और साथ ही सुरक्षित ऋण विकल्पों में कमी की वजह से हुई है, जिससे घरों के पास बहुत कम विकल्प बचे हैं।

राज्य की औद्योगिक बुनियाद भी बहुत कमज़ोर है, यह बात ममता बनर्जी के उदार दोस्त अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था में विनिर्माण का योगदान सिर्फ़ 18.8: ही है, जो राष्ट्रीय औद्योगिक औसत से कम है। जोर–शोर से प्रचारित 'वैश्विक व्यापार मेलों (ग्लोबल बिज़नेस समिट्स)' के बावजूद, 2019 और 2025 के बीच वास्तव में विद. `शी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) का प्रवाह सिर्फ़ 15,256 करोड़ रूपये था, जो महाराष्ट्र या कर्नाटक जैसे राज्यों द्वारा किए गए निवेश का एक छोटा सा हिस्सा है। इसके अलावा, 2025 के उत्तरार्द्ध में पूंजीगत व्यय में 35.1: की कमी आ गई है, जो यह दिखाता है कि राज्य दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण के लिए ज़रूरी कारखानों, पुलों और बंदरगाहों पर कम खर्च कर रहा है।

उच्च मजदूरी वाले औद्योगिक रोजगार के अभाव ने पश्चिम बंगाल को वास्तव में श्रम निर्यात करने वाली अर्थव्यवस्था में बदल दिया है। जबकि आधिक. ारिक बेरोज़गारी दर 3.6: बताई गई है, बेरोज़गारी भत्ता के लिए बांग्लार युवा साथी की मांग कुछ और ही कहानी कहती है रू लगभग 27.8 लाख युवा, जिनमें से कई के पास डिग्री है, उन्हें मूल भत्ता से ज़्यादा वेतन वाला रोजगार नहीं मिल रहा है। इन भत्तों के लिए राज्य के 2026–27 के बजट में 5,000 करोड़ रूपये के आबंटन को निजी क्षेत्र में खपत की गहरी अधोसंरचनात्मक कमी के लिए मरहम–पट्टी के तौर पर देखा जाना चाहिए। ग्रामीण इलाकों में बताई जा रही 3.1: की बेरोज़गारी दर भी गुमराह करने वाली है, क्योंकि 63.2: आबादी छोटे, अलाभकारी खेती के टुकड़ों में अपना काम करती है, जो छिपी हुई बेरोज़गारी का एक शास्त्रीय मामला है।

पलायन का स्तर राज्य के कार्यबल के अंदर की निराशा को दिखाता है। 2025 के अंत के सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, लगभग 22.40 लाख मजदूर दूसरे राज्यों में काम कर रहे हैं, जबकि श्रमश्री योजना की रिपोर्ट के अनुसार, 31.77 लाख प्रवासी मजदूरों ने लौटकर, स्थानीय मदद पाने के लिए अपना पंजीयन कराया है। 2025 के एक अध्ययन में पाया गया है कि इनमें से 62.9: लोग सिर्फ़ बेहतर रोजगार के मौकों के लिए पलायन करते हैं, और 25: प्रवासी परिवार भेजे गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ़ खाने के लिए करते हैं। आजीविका के लिए यह पलायन इस बात को पुष्ट करता है कि आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए, राज्य छोड़ना ही आधारभूत पोषण की ज़रूरतों को पूरा करने का एकमात्र तरीका है — यह बार–बार दुहराई जाने वाली एक आर्थिक नाकामी है, जिसे मौजूदा सरकार का समर्थन करने वाले लोग अनदेखा कर रहे हैं।

'बजट में क्या नजरअंदाज किया गया है?'

उद्योग और खनिज के लिए 2,842.96 करोड़ रूपये का आबंटन कुल खर्च का सिर्फ़ 0.70: है। यह बहुत कम निवेश खास तौर पर चिंता की बात है, क्योंकि राज्य अभी ज़्यादा उत्पादकता वाले विनिर्माण रोजगार की कमी से जूझ रहा है। विज्ञान, प्रोद्योगिकी और पर्यावरण के मामले में यह अनदेखी और भी साफ़ है, जिसे सिर्फ़ 155.94 करोड़ दिए गए हैं, जो कुल बजट का लगभग 0.03: है। यह बहुत कम वित्त–पोषण आधुनिक प्रौद्योगिकी में मुकाबला करने की राज्य की काबिलियत को असरदार तरीके से कम कर देती है। जहाँ वैश्विक प्रतियोगी एआई, जैव–प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा में भारी निवेश कर रहे हैं, वहीं पश्चिम बंगाल का आबंटन, जिसमें से सिर्फ़ लगभग 82 करोड़ रूपये ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए है, यह सुनिश्चित करता है कि राज्य के सबसे तेज़ दिमाग कर्नाटक, तमिलनाडु या महाराष्ट्र जैसे ज़्यादा प्रौद्योगिकी वाले आगे बढ़े हुए राज्यों में लगातार प्रतिभा पलायन (ब्रेन ड्रेन) करते रहें। शोध और विकास कार्यों में निवेश की यह कमी इसी बात को पक्का करती है कि बंगाल एक प्रौद्योगिकी निर्माण राज्य होने के बजाय सिर्फ़ उपभोक्ता राज्य बना रहे, जिससे उत्पादक रोज़गार के सृजन में अंतर और बढ़ जाता है।

सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण के लिए सिर्फ 5,858. 95 करोड़ रूपये के आबंटन से यह अनदेखी और भी साफ़ हो जाती है, जो बजट का सिर्फ़ 1.48: है। यह देखते हुए कि पश्चिम बंगाल भारत के सबसे ज़्यादा बाढ़ वाले इलाकों में से एक है, जो उत्तर में नदी किनारे के कटाव और दक्षिण में ज्वार–भाटे से जूझता है, यह कम आबंटन बड़े अधोसंरचनात्मक परियोजनाओं और 1,500 करोड़ रुपए के घाटल मास्टर प्लान जैसे बार–बार आने वाले चुनावी मुद्दा. ं या पूरे राज्य भर की पुरानी नहर प्रणाली को आधु. निक बनाने के लिए काफ़ी नहीं है। इसी तरह, ऊर्जा क्षेत्र को सिर्फ़ 5,372.50 करोड़ मिले हैं, जो कुल खर्च का 1.36: है। इस कम निवेश से राज्य के बहु–प्रचारित औद्योगिक लक्ष्यों में गतिरोध का खतरा है।

शिक्षा के क्षेत्र में, उच्च शिक्षा के लिए 6,858.69 करोड़ रुपये का आबंटन है, फिर भी यह आंकड़ा मानवीय पूंजी में गहरे संकट को छुपाता है। जबकि राज्य तरुणेर स्वप्नो जैसी छात्रों को प्रत्यक्ष फंड योजना (डायरेक्ट–टू–स्टूडेंट स्कीम) का आबंटन जारी रखे हुए है, जिसके लिए टैबलेट और स्मार्टफोन के लिए 900 करोड़ रुपये दिए गए थे, शिक्षण की मुख्य अधोसंरचना चरमरा रही है। राज्य में अभी भी सेकेंडरी स्कूलों में शिक्षकों के 35,726 और प्राथमिक शिक्षकों के 13,421 पद रिक्त हैं। यह रिक्तता काफी हद तक 2016 के एसएलएसटी भर्ती घोटाले का नतीजा है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था में गड़बड़ियों के कारण 2025 में लगभग 26,000 नियुक्तियां रद्द कर दी थी।

22,338.08 करोड़ रुपये का स्वास्थ्य बजट दिखाता है कि बीमा की वजह से सार्वजनिक कल्याण का निजीकरण हो रहा है। स्वास्थ्य साथी मॉडल, जिसमें 2.45 करोड़ परिवार शामिल हैं, निजी चिकित्सा पूंजी के साथ दावा निर्धारण करने के लिए सार्वजनिक वित्त का अच्छे से इस्तेमाल करता है। यह सार्वभौमिक कवरेज का दिखावा करता है, जबकि वित्तीय तनाव का मामला ज़्यादा बना रहता है, जिससे गरीबों को बुनियादी निदान के लिए अपनी संपत्तियां बेचनी पड़ती हैं। ग्रामीण इलाकों में डॉक्टर–मरीज अनुपात राष्ट्रीय औसत 1रू811 से काफी नीचे होने के बावजूद, राज्य के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मज़बूत बनाने के बजाय बजट में निजी अस्पतालों की लाभ–सीमा को प्राथमिकता दी गई है, जिससे आम लोगों के जीने का सवाल बाजार के भरोसे हो गया है।

इस बजट में 'गर्व' करने लायक कुछ नहीं है, बल्कि यह स्थाई निर्भरता की ऐसी योजना है, जो लोगों को गरीबी में फंसाए रखता है। असली तरक्की तभी होती है, जब सरकार बिगड़ी हुई व्यवस्था को ठीक करे, एक उत्पादक अर्थव्यवस्था का निर्माण करें, जहाँ मज़दूरों को घर पर ही अहमियत दी जाए, न कि उन्हें आजीविका के लिए दूसरे राज्यों में पलायन करने के लिए मजबूर किया जाए। ममता के उदार समर्थक इस दर्दनाक सच्चाई को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, लेकिन लाखों प्रवासी मज़दूरों और कर्ज़ में डूबकर संघर्ष कर रहे परिवारों के पास ऐसा करने का कोई कारण नहीं है।

'(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं। संपर्क रू 94242–31650)

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

माई भारत के चिंतन शिविर का संपर्क से संवाद, संवाद से समाधान और समाधान से संकल्प की भावना के साथ समापन

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के युवा कार्यक्रम विभाग द्वारा आयोजित दो–दिवसीय माई भारत–एनएसएस चिंतन शिविर का आज बेंगलुरु स्थित इंस्टीट्यूट फॉर स्टेम सेल साइंस एंड रीजेनरेटिव मेडिसिन (इनस्टेम) में समापन हुआ। इस चिंतन शिविर में माई भारत और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के वरिष्ठ अधिकारियों और फील्ड कर्मचारी ने एक साथ मिलकर विकसित भारत /2047 के विजन के अनुरूप युवाओं की भागीदारी के ढांचे को मजबूत करने और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सुधार लाने पर विस्तृत विचार–विमर्श किया।

इस कार्यक्रम की शोभा केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया और युवा कार्यक्रम एवं खेल राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा खडसे ने बढ़ाई। इस अवसर पर कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रति. निधियों ने विचार–विमर्श में भाग लिया और देश भर में युवा कार्यक्रमों को मजबूत करने के लिए अपने अनुभव और सर्वोत्तम कार्यप्रणालियाँ साझा कीं।

पहले दिन ष्संवाद से समाधानष विषय के तहत हुई चर्चाओं को आगे बढ़ाते हुए, दूसरे दिन का मुख्य केंद्र ष्समाधान से संकल्पष रहा, जिसका उद्देश्य विचारों और अंतर्दृष्टि को ठोस कार्ययोजनाओं में बदलना था। दिन की शुरुआत कोलेबोरेटिव पॉलिसी लैब्स के रूप में विषय–आधारित चर्चाओं के साथ हुई, जहाँ प्रतिभागियों ने युवाओं तक पहुँच बढ़ाने, स्वयंसेवक नेटवर्क का विस्तार करने और राज्यों में कार्यक्रमों के क्रियान्वयन को बेहतर बनाने के लिए समाधान और कार्ययोजनाएँ तैयार कीं। सत्रों के दौरान, थीमैटिक ग्रुप्स ने युवाओं को संगठित करने और युवाओं के विकास के लिए काम करने वाले संस्थानों के बीच समन्वय सुधारने के उद्देश्य से केस स्टडी और सुझाव प्रस्तुत किए। इन प्रस्तुतियों के बाद, प्रस्तावित रणनीतियों को और बेहतर बनाने और उनके क्रियान्वयन के तरीकों में सामंजस्य बैठाने के लिए सामूहिक विचार–विमर्श किया गया। अधिकारियों और प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए, युवा

कार्यक्रम एवं खेल राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा निखिल खडसे ने माई भारत और एनएसएस के जिला एवं क्षेत्रीय कार्यालयों से फंड के बजाय कार्यक्षमता पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रभावी क्रियान्वयन और जमीनी स्तर पर जुड़ाव ही सार्थक है और युवाओं के विकास की कुंजी है। उन्होंने अधिकारियों को ग्राम सभा स्तर तक अपनी पहुँच बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि युवा विकास की पहल गाँवों तक पहुँचे और जमीनी स्तर पर युवाओं को सशक्त बनाया जा सके। बड़े पैमाने पर कार्यक्रमों को लागू करने में आने वाली चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि राह में चुनौतियां और बाधाएं तो आएंगी ही, लेकिन हमें उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ना है। उन्होंने अधिकारियों से आह्वान किया कि वे सशक्त युवाओं के माध्यम से विकसित भारत के विजन को साकार करने के लिए दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करें। इससे पहले, ब्रिक–इनस्टेम (ठत्प्ब्‌दृपदैजमउ) की निदेशक प्रोफेसर मनीषा एस. इनामदार ने संवाद के लिए एक प्लेटफ़ॉर्म तैयार करने और जमीनी स्तर पर माई भारत एवं एनएसएस कार्यालयों की वास्तविक परिस्थितियों को समझने के लिए इस चिंतन शिविर की अवधारणा की सराहना की। उन्होंने कहा कि जिस तरह विज्ञान में हितधारकों के बीच चर्चा से नए विचार जन्म लेते हैं, उसी तरह इस प्रकार का संवाद स्थानीय स्तर पर आने वाली चुनौतियों के समाधान खोजने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

चर्चा के परिणामों का सार प्रस्तुत करते हुए, युवा कार्यक्रम विभाग की सचिव डॉ. पल्लवी जैन गोविल ने युवा विकास की पहलों के लिए निरंतर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने हेतु केंद्रीय मंत्री और राज्य मंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने ष्लेट्स कोलैबोरेट फॉर यूथष की भावना पर भी जोर दिया और विभिन्न विभागों एवं संस्थानों को माई भारत प्लेटफॉर्म से जुड़ने और देश भर में युवाओं की भागीदारी को मजबूत करने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

समापन सत्र के दौरान, युवाओं की भागीदारी बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान देने वाले अधिकारियों और जिलों को सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय मतदाता दिवस और बजट क्वेस्ट 2026 जैसे कार्यक्रमों के तहत उनके सराहनीय प्रयासों की सराहना की गई। इस अवसर पर केरल के राज्य निदेशक श्री अनिल कुमार को राष्ट्रीय मतदाता दिवस 2026 में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया, वहीं तमिलनाडु के राज्य निदेशक श्री सेंथिल कुमार को बजट क्वेस्ट 2026 क्विज में सर्वश्रेष्ठ राज्य प्रदर्शन के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया। जिला स्तर पर, बजट क्वेस्ट 2026 में शानदार प्रदर्शन के लिए कर्नाटक के बेंगलुरु अर्बन की जिला युवा अधिकारी (डीवायओ) श्रीमती ए. नागालक्ष्मी को सर्वश्रेष्ठ जिला प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। इसी क्रम में, चेन्नई (तमिलनाडु) के श्री शिवा एम.एस. (डीवायओ) को दूसरा और हैदराबाद (तेलंगाना) की सुश्री खुशबू गुप्ता (डीवायओ) को तीसरा स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया।

उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने मिजोरम विश्वविद्यालय के 20वें दीक्षांत समारोह को संबोधित किया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने आज आइजोल में मिजोरम विश्वविद्यालय के 20वें दीक्षांत समारोह को संबोधित किया और स्नातक होने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनसे 2047 तक 'विकसित भारत' के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आग्रह किया।

विश्वविद्यालय परिसर की प्राकृतिक सुंदरता का उल्लेख करते हुए, उपराष्ट्रपति ने कहा कि मिजोरम विश्वविद्यालय सबसे खूबसूरत परिसरों में से एक है और यह इस बात का प्रतीक है कि शांति एवं उद्देश्य पर आधारित शिक्षा क्या कुछ हासिल कर सकती है।

पिछले एक दशक के दौरान पूर्वोत्तर क्षेत्र में हुए विभिन्न बदलावों को रेखांकित करते हुए, उपराष्ट्रपति ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस क्षेत्र को भारत के विकास की प्रक्रिया के केन्द्र में रखा गया है।

उन्होंने कहा कि हाल ही में शुरू हुई बैराबी–सैरांग रेलवे लाइन सहित बेहतर कनेक्टिविटी और उड़ान एवं पीएम–डिवाइन जैसी पहलों से विकास में तेजी आ रही है और इस क्षेत्र के लोगों को नए अवसरों के निकट लाया जा रहा है।

वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' के विजन पर जोर देते हुए, उपराष्ट्रपति ने युवाओं से नौकरी की तलाश से आगे बढ़कर अवसरों के सृजन पर ध्यान केन्द्रित करने का आग्रह किया। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन, बांस पर आधारित उद्योगों, जैविक कृषि, हस्तशिल्प और डिजिटल सेवाओं जैसे सेक्टरों की अपार संभावनाओं को रेखांकित किया।

युवाओं में मादक पदार्थों के दुरुपयोग के बढ़ते खतरे पर चिंता व्यक्त करते हुए, उन्होंने युवाओं से मादक पदार्थों से दूर रहने और अनुशासित एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का आह्वान किया।

चिप्स टू स्टार्टअप्स (सी2एस) के अंतर्गत , भारत ने 85,000 सेमीकंडक्टर इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने के अपने लक्ष्य की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : भारत सरकार की प्रशिक्षण, कौशल को बढ़ाने और कार्यबल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिभा विकास को प्राथमिकता देने की पहल चिप्स टू स्टार्टअप्स (सी2एस) पहल के इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) के तहत, केंद्रीय रेल, सूचना और प्रसारण, और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री, अश्विनी वैष्णव ने कहा कि भारत ने 85,000 इंजीनियर को सेमीकंडक्टर डिजाइन में प्रशिक्षण देने के अपने 10 साल के लक्ष्य के लिए पिछले 04 वर्षों में ही महत्वपूर्ण प्रगति की है।

श्री वैष्णव ने बताया कि सिनोप्सिस, कैडेंस, सीमेंस, रेनेसा, एंसिस और एएमडी द्वारा समर्थित विश्व स्तरीय इलेक्ट्रॉनिक डिजाइन ऑटोमेशन (ईडीए) उपकरण देश भर के 315 शैक्षणिक संस्थानों में उपलब्ध कराए गए हैं। इन टूल्स की मदद से छात्रों को सेमीकंडक्टर चिप्स डिजाइन करने का व्यावहारिक अनुभव मिल रहा है। इन चिप्स का निर्माण और परीक्षण सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला (एससीएल) , मोहाली में किया जा रहा है। इससे छात्रों को डिजाइन से लेकर फैब्रिकेशन, पैकेजिंग और परीक्षण तक की पूरी प्रक्रिया का व्यावहारिक अनुभव मिल रहा है। यह पहल दुनिया के सबसे बड़े ओपन–एक्सेस ईडीए कार्यक्रम के रूप में विकसित हुई है, जिसमें चिप डिजाइन प्रशिक्षण के लिए अब तक 1.85 करोड़ घंटे से अधिक ईडीए उपकरण का उपयोग दर्ज किया गया है और यह लगातार बढ़ रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि आज, पूरे देश में असम से गुजरात और कश्मीर से कन्याकुमारी तक के शैक्षणिक संस्थानों के छात्र सक्रिय रूप से सेमीकंडक्टर डिजाइन में संलग्न हैं। यह भारत की तकनीकी क्षमता और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

वैश्विक उद्योग की आवश्यकताओं का उल्लेख करते हुए, श्री वैष्णव ने कहा कि जैसे–जैसे सेमीकंडक्टर उद्योग 800–900 बिलियन अमेरिकी डॉलर के मौजूदा आकार से बढ़कर 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा, लगभग 2 मिलियन कुशल पेश. `वरों की मांग होगी। यह भारत के युवाओं के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर प्रस्तुत करता है।

उन्होंने घोषणा की कि भारत सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 के अंतर्गत 315 शैक्षणिक संस्थानों को 500 शैक्षणिक संस्थानों तक विस्तारित किया जाएगा।

महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में आयोजित महिलाओं की स्थिति पर आयोग के 70वें सत्र में भाग लेंगी

सीएसडब्ल्यू–70 सत्र के दौरान भारत, महिला नेतृत्व वाले विकास, न्याय तक पहुंच और वैश्विक दक्षिण सहयोग को प्रमुखता देगा

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर 9 से 12 मार्च 2026 तक संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित महिलाओं की स्थिति पर आयोग (सीएसडब्ल्यू–70) के 70वें सत्र में भाग लेने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयॉर्क की यात्रा पर रहेंगी। महिला स्थिति आयोग (सीएसडब्ल्यू) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित प्रमुख वैश्विक अंतर–सरकारी निकाय है।

इस यात्रा के दौरान, मंत्री आयोग की आम चर्चा में भारत की ओर से अपना पक्ष रखेंगी और ष्महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसाष विषय पर उच्च स्तरीय बैठक को भी संबोधित करेंगी। वे महिला नेतृत्व वाले विकास, न्याय तक पहुंच को मजबूत करने और महिलाओं एवं लड़कियों की सुरक्षा, गरिमा और सशक्तिकरण सुनिश्चित करने की दिशा में भारत की पहलों पर भी प्रकाश डालेंगी। श्रीमती ठाकुर न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन द्वारा आयोजित ष्महिला नेतृत्व वाला विकास और दक्षिण–दक्षिण सहयोग–आईबीएसए कोष की कामयाबी की कहानियांष शीर्षक वाले एक कार्यक्रम में भी भाग लेंगी।

इस कार्यक्रम में भारत–ब्राजील–दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) कोष के तहत शुरू की गई सफल विकास सहयोग पहलों को प्रदर्शित किया जाएगा, खास तौर पर ऐसी पहलें, जिनका मकसद वैश्विक दक्षिण के देशों में महिलाओं को सशक्त बनाना और समावेशी विकास को मजबूत करना है। सीएसडब्ल्यू–70 की प्राथमिकता थीम ष्सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करना और उसे मजबूत करना है, जिसमें समावेशी और न्यायसंगत कानूनी प्रणालियों को बढ़ावा देना, भेदभावपूर्ण कानूनों, नीतियों और प्रथाओं को खत्म करना और संरचनात्मक मुश्किलों को दूर करना शामिल है।ष

सत्र के समीक्षा विषय में आयोग के 65वें सत्र के स्वीकृत निष्कर्षों के मुताबिक, सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की पूर्ण और प्रभावी भागीदारी और निर्णय लेने की क्षमता के साथ–साथ महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा के उन्मूलन की जांच की जाएगी।

आयोग, सत्र के प्रमुख परिणाम स्वरूप स्वीकृत निष्कर्षों पर भी बातचीत करेगा, जो लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर वैश्विक नीतिगत प्रतिबद्धताओं का मार्गदर्शन करते हैं।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

संपादकीय

वन्यजीव संरक्षण मिसाल

संपादक – राज कुमार

काज़ीरंगा की यह उपलब्धि हमें यह भी सिखाती है कि संरक्षण केवल किसी एक पार्क की सीमाओं तक सीमित नहीं रह सकता। जब किसी प्रजाति की संख्या बढ़ती है, तो उसके साथ जुड़ी पारिस्थितिकी, आवास और मानव–वन्यजीव संबंधों के नए प्रश्न भी सामने आते हैं। आज काज़ीरंगा में गैंडों की बढ़ती आबादी जहाँ एक बड़ी उपलब्धि है, वहीं यह संकेत भी है कि संरक्षण की अगली रणनीति अब अधिक व्यापक और दूरदर्शी होनी चाहिए। ब्रह्मपुत्र की वार्षिक बाढ़ काज़ीरंगा के पारिस्थितिकी तंत्र का एक स्वाभाविक हिस्सा है। यह बाढ़ घास के मैदानों को नया जीवन देती है और जैव विविधता को बनाए रखती है, लेकिन जब पानी बहुत अधिक बढ़ जाता है तो जानव. रों को सुरक्षित स्थानों की ओर जाना पड़ता है। ऐसे समय में राष्ट्रीय राजमार्ग और आसपास की मानव बस्तियाँ गैंडों तथा अन्य वन्यजीवों के लिए खतरा बन जाती हैं। इसलिए संरक्षण विशेषज्ञ लंबे समय से वन्यजीव गलियारों को सुरक्षित बनाने और ऊँचे शरणस्थल विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देते रहे हैं, ताकि बाढ़ के दौरान जानवर सुरक्षित स्थानों तक पहुँच सकें। इसके साथ ही स्थानीय समुदायों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। काज़ीरंगा के आसपास रहने वाले लोगों के लिए जंगल केवल एक संरक्षित क्षेत्र नहीं बल्कि उनकी आजीविका और संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जब लोगों को यह महसूस होता है कि संरक्षण उनके हितों के विरुद्ध नहीं बल्कि उनके भविष्य के लिए आवश्यक है, तब वे भी इस प्रयास का हिस्सा बनते हैं। पर्यटन, स्थानीय हस्तशिल्प और पर्यावरण आधारित रोजगार जैसे विकल्पों ने कई समुदायों को संरक्षण के साथ जोड़ने में मदद की है। फिर भी चुनौतियाँ समाप्त नहीं हुई हैं। जलवायु परिवर्तन, बाढ़ की तीव्रता में वृद्धि, और भूमि उपयोग में बदलाव जैसे कारक भविष्य में काज़ीरंगा के पारिस्थितिकी संतुलन को प्रभावित कर सकते हैं। इसी कारण संरक्षण की रणनीति को लगातार बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढालना होगा। वैज्ञानिक शोध, सटीक डेटा और तकनीकी निगरानी भविष्य में इस प्रक्रिया की आधारशिला बनेंगे। काज़ीरंगा की कहानी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उस निराशावाद को चुनौती देती है जो अक्सर वन्यजीव संरक्षण की चर्चा में दिखाई देता है। दुनिया भर में कई प्रजातियाँ घटती संख्या और घटते आवास से जूझ रही हैं, लेकिन काज़ीरंगा यह दिखाता है कि यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रशासनिक दक्षता और समाज की भागीदारी एक साथ आएँ तो परिस्थितियाँ बदली जा सकती हैं। इस सफलता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि इसे केवल एक उपलब्धि के रूप में न देखा जाए, बल्कि एक सतत प्रक्रिया के रूप में समझा जाए। गैंडे की वापसी इस बात का प्रमाण है कि प्रकृति को अवसर दिया जाए तो वह स्वयं को पुनर्जी. वित करने की क्षमता रखती है। अब जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करने की है कि यह सफलता आने वाले दशकों तक कायम रहे और काज़ीरंगा जैसे मॉडल देश के अन्य वन्यजीव क्षेत्रों के लिए भी प्रेरणा बन सकें।

राष्ट्रपति भवन में राजाजी की प्रतिमा और औपनिवेशिक प्रतीकों से मुक्ति की बहस

नीरज कुमार दुबे

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा राष्ट्रपति भवन परिसर में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण केवल एक औपचारिक सांस्कृतिक आयोजन नहीं था, बल्कि यह समकालीन भारत की वैचारिक दिशा को रेखांकित करने वाला एक महत्वपूर्ण क्षण भी था। जिस स्थान पर पहले ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस की प्रतिमा स्थापित थी, वहीं अब स्वतंत्र भारत के पहले और एकमात्र भारतीय गवर्नर जनरल राजाजी की प्रतिमा का स्थापित होना प्रतीकों के स्तर पर एक बड़े परिवर्तन का संकेत देता है। सरकार ने इसे औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति की दिशा में एक ठोस कदम बताया है और इसे राष्ट्र के आत्मसम्मान तथा सांस्कृतिक पुनर्स्थापन की प्रक्रिया से जोड़ा है।

यह कार्यक्रम राजाजी उत्सव के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें उपराष्ट्रपति, अनेक केंद्रीय मंत्री और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में राजाजी के व्यक्तित्व, उनके वैचारिक साहस और स्वतंत्रता के बाद उनकी भूमिका का स्मरण किया। उन्होंने उल्लेख किया कि राजाजी ने जब गवर्नर जनरल के रूप में अपने कक्ष का उपयोग किया तो वहां ब्रिटिश सत्ता के प्रतीकों के स्थान पर रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गांधी के चित्र लगाए। यह केवल सजावट का परिवर्तन नहीं था, बल्कि मानसिक उपनि. वेशवाद से मुक्ति का प्रतीकात्मक संदेश था। राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि राष्ट्रपति भवन में अब ब्रिटिश अधिकारियों के चित्रों के स्थान पर परम वीर चक्र विजेताओं के चित्र लगाए जा रहे हैं और परिसर को आम नागरिकों के लिए अधिक खुला बनाया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शासन सत्ता के केंद्र को जनता से जोड़ने और ऐतिहासिक स्मृतियों को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी इस अवसर पर भेजे गए संदेश में राजाजी और महात्मा गांधी के गहरे संबंधों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि दोनों के बीच आपसी विश्वास और मित्रता का रिश्ता था, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन और उसके बाद के राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह संदेश केवल औपचारिक श्रद्धांजलि नहीं था, बल्कि उस वैचारिक धारा की निरंतरता भी था, जिसे वर्तमान सरकार पिछले कुछ वर्षों से आगे बढ़ा रही है।

पिछले दशक में अनेक ऐसे कदम उठाए गए हैं जिन्हें औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के व्यापक अभियान का हिस्सा माना गया। इंडिया गेट के निकट सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा की स्थापना, राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का निर्माण, सेंट्रल विस्टा परियोजना के अंतर्गत नए संसद भवन का निर्माण और उसमें सेंगोल की स्थापना, कई सड़कों और संस्थानों के औपनिवेशिक नामों का परिवर्तनकृये सभी कदम प्रतीकों के माध्यम से राष्ट्रीय स्मृति को पुनर्गठित करने की प्रक्रिया के रूप में देखे जा सकते हैं। राष्ट्रपति भवन में लुटियंस की प्रतिमा हटाकर राजाजी की प्रतिमा स्थापित करना इसी क्रम की एक कड़ी है।

लुटियंस ब्रिटिश शासनकाल के प्रमुख वास्तुकार थे और नई दिल्ली की वास्तु

संरचना में उनका योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। किंतु औपनिवेशिक सत्ता के प्रति. निधि के रूप में उनकी प्रतिमा का सत्ता के केंद्र में स्थापित होना स्वतंत्र भारत की आत्मछवि से मेल खाता है या नहीं, इस पर बहस लंबे समय से चलती रही है। सरकार का मानना है कि राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ मानसिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता भी आवश्यक है। यदि सत्ता के केंद्र में अब भी औपनिवेशिक प्रतीक उपस्थित हों तो यह अधूरी स्वतंत्रता का संकेत देता है। इसलिए राजाजी की प्रतिमा की स्थापना को एक वैचारिक पुनर्स्थापन के रूप में प्रस्तुत किया गया।

हालांकि इस निर्णय पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिक्रिया हुई। ब्रिटेन के लेखक मैट रिडले, जो लुटियंस के परदादा हैं, ने इस पर खेद व्यक्त किया और सोशल मीडिया पर अपनी भावनाएं साझा कीं। किंतु भारतीय संदर्भ में यह परिवर्तन एक व्यापक विमर्श का हिस्सा है, जिसमें इतिहास की पुनर्व्याख्या और राष्ट्रीय अस्मिता की पुनर्स्थापना शामिल है। किसी भी राष्ट्र की सार्वजनिक स्मृति उसके आत्मविश्वास और भविष्य की दिशा को प्रभावित करती है। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि स्वतंत्रता के दशकों बाद भी भारत अपने प्रतीकों की समीक्षा करे। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, जिन्हें स्नेहपूर्वक राजाजी कहा जाता है, भारतीय राजनीति के एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे। 1878 में तमिलनाडु में जन्मे राजाजी पेशे से वकील थे और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। वह महात्मा गांधी के निकट सहयोगी रहे और अनेक आंदोलनों में भाग लिया। स्वतंत्रता के बाद 1948 से 1950 तक वह भारत के गवर्नर जनरल रहे। यह वह काल था जब भारत ब्रिटिश शासन से पूरी तरह अलग होकर गणराज्य बनने की दिशा में अग्रसर था। वायसराय हाउस, जो ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति का प्रतीक था, उसी भवन में एक भारतीय का सर्वोच्च पद पर आसीन होना ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतीक था। आज उसी भवन में उनकी प्रतिमा स्थापित होना इतिहास के चक्र के पूर्ण होने जैसा प्रतीत होता है। राजाजी का व्यक्तित्व केवल राजनीति तक सीमित नहीं था।

वह लेखक, चिंतक और सामाजिक सुधारक भी थे। उन्होंने तमिल भाषा में रामायण और महाभारत की लोकप्रिय व्याख्याएं लिखीं, जो आज भी व्यापक रूप से पढ़ी जाती हैं। वह सादगी, नैतिकता और वैचारिक स्पष्टता के प्रतीक माने जाते थे। किंतु उनका राजनीतिक जीवन जटिलताओं से भी भरा रहा। 1937 में मद्रास प्रेसीडेंसी के प्रीमियर के रूप में उन्होंने स्कूलों में हिंदी को अनिवार्य करने का निर्णय लिया, जिसका तीव्र विरोध हुआ और द्रविड आंदोलन को बल मिला। बाद के वर्षों में उन्होंने स्वयं हिंदी थोपने के विरोध में भी स्वर उठाया। 1959 में उन्होंने स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की, जो न्यूनतम शासन और आर्थिक स्वतंत्रता की पक्षधर थी। 1967 के तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की पराजय में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस प्रकार वह तमिल राजनी. ति और राष्ट्रीय राजनीति के बीच एक सेतु के रूप में देखे जाते हैं।

राजाजी की प्रतिमा की स्थापना का समय भी राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। तमिलनाडु की राजनीति लंबे समय से द्रविड दलों के प्रभाव में रही है और भारतीय जनता पार्टी को वहां अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। ऐसे में एक प्रतिष्ठित तमिल नेता को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान देना राजनीतिक संदेश भी हो सकता है। राजाजी द्रविड दलों से जुड़े नहीं थे, परंतु तमिल समाज में उनका सम्मान है। केंद्र सरकार द्वारा काशी तमिल संगमम जैसे कार्यक्रमों का आयोजन और नए संसद भवन में सेंगोल की स्थापना पहले ही तमिल सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ने का प्रयास माने गए हैं। राजाजी की प्रतिमा उसी प्रयास का विस्तार प्रतीत होती है।

आलोचक इसे चुनावी राजनीति से जोड़कर देख सकते हैं, किंतु यह भी सत्य है कि राष्ट्र निर्माण में प्रतीकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सार्वजनिक स्थलों पर किन व्यक्तित्वों को स्थान दिया जाता है, यह समाज की प्राथमिकताओं और मूल्यों को दर्शाता है। यदि भारतीय नायकों और स्वतंत्रता सेनानियों को सत्ता के केंद्र में स्थान मिलता है तो यह नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। साथ ही यह संदेश भी जाता है कि राष्ट्र अपनी ऐतिहासिक स्मृति को स्वयं गढ़ने में सक्षम है।

राष्ट्रपति भवन में हो रहे परिवर्तनों को व्यापक संदर्भ में देखें तो यह स्पष्ट होता है कि शासन सत्ता की संरचनाओं को अधिक जनोन्मुख बनाने का प्रयास हो रहा है। परिसर को आम जनता के लिए अधिक सुलभ बनाना, वीर सैनिकों के चित्र स्थापित करना और औपनिवेशिक प्रतीकों को हटानाकृये सभी कदम उस विचार को पुष्ट करते हैं कि भारत अब आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना चाहता है।

यह परिवर्तन केवल भौतिक संरचनाओं में नहीं, बल्कि मानसिकता में भी अपेक्षित है।

अंततः राजाजी की प्रतिमा की स्थापना एक प्रतीकात्मक घटना से कहीं अधिक है। यह उस विमर्श का हिस्सा है जिसमें भारत अपने अतीत की पुनर्समीक्षा कर रहा है और यह तय कर रहा है कि भविष्य की दिशा क्या होगी। यह कदम इतिहास, राजनीति और सांस्कृतिक पहचान की बहस को पुनः केंद्र में लाता है। क्या इससे चुनावी समीकरण बदलेंगे, यह भविष्य के गर्भ में है, किंतु इतना स्पष्ट है कि राष्ट्रपति भवन की सीढ़ियों पर स्थापित यह प्रतिमा भारतीय चेतना, आत्मसम्मान और वैचारिक स्वाधीनता का प्रतीक बनकर उभरी है। यह संदेश देती है कि स्वतंत्रता केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि स्मृति, प्रतीक और मानसिकता के स्तर पर भी पूर्णता की मांग करती है।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

तनाव, आतंक और अंधकार के बीच शिव का प्रकाश

शिव का स्वरूप द्वंद्वों से परे है। वे संहारक भी हैं और सृजनकर्ता भी। यह संदेश आज के समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो जड़, जर्जर और अनैतिक है, उसका विनाश आवश्यक है ताकि नवजीवन अंकुरित हो सके। जब हम अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ और मोह का संहार करते हैं, तभी सच्चा निर्माण संभव होता है।

ललित गर्ग

15 फरवरी 2026 को जब समूचा भारत महाशिव. रात्रि का पावन पर्व मनाएगा, तब यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं होगा, बल्कि आत्मजागरण का विराट अवसर होगा। महाशिवरात्रि वह रात्रि है जब साधक अपने भीतर के अंधकार को पहचानकर शिवत्व के प्रकाश से उसे आलोकित करने का संकल्प लेता है। शिव केवल देवता नहीं, वे चेतना के शाश्वत आयाम हैं–महाकाल, जो समय से परे हैं, नटराज, जो सृष्टि की लय और ताल के अधिपति हैं और नीलकंठ, जो विष को पीकर भी अमृत का संदेश देते हैं। आज का युग विज्ञान, तकनीक और उपभोग का युग है। मानव ने अंतरिक्ष को नापा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित की, लेकिन अपने भीतर की शांति खो बैठा। तनाव, अवसाद, असंतोष, युद्ध, आतंकवाद और नैतिक विघटन की घटनाएँ विश्व को विचलित कर रही हैं। ऐसे दौर में शिव की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। शिव भक्ति कोई चमत्कारिक जादू नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित करने का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक मार्ग है।

यह वीनर्स नकली दांतों से 300 गुना बेहतर है! और कीमत बहुत सस्ती है

शिव का स्वरूप द्वंद्वों से परे है। वे संहारक भी हैं और सृजनकर्ता भी। यह संदेश आज के समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो जड़, जर्जर और अनैतिक है, उसका विनाश आवश्यक है ताकि नवजीवन अंकुरित हो सके। जब हम अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ और मोह का संहार करते हैं, तभी सच्चा निर्माण संभव होता है। यही शिव का वास्तविक चमत्कार है भीतर के विष का रूपांतरण। समुद्र–मंथन की कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि मानवीय जीवन का प्रतीक है। जब संसार अमृत की खोज में लगा, तब सबसे पहले विष निकला। आज भी जब मानव प्रगति की दौड़ में है, तो साथ में प्रदूषण, हिंसा और असंतुलन का विष भी उत्पन्न हो रहा है। उस विष को कौन पियेगा? शिव का नीलकंठ रूप हमें सिखाता है कि समाज के संकट को दूर करने के लिए त्याग और सहनशीलता आवश्यक है। जब हम अपने स्तर पर कटुता को निगल लेते हैं और उसे बाहर नहीं फैलाते, तभी समाज में शांति बनी रहती है। इसी प्रकार गंगा के अवतरण की कथा बताती है कि अनियंत्रित शक्ति विनाशकारी हो सकती है। शिव ने उसे अपनी जटाओं में धारण कर संतुलित प्रवाह दिया। आज के संदर्भ में यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। तकनीक, धन, सत्ता–ये सभी शक्तियाँ हैं। यदि वे अनियंत्रित हों तो विध्वंसक बनती हैं, और यदि शिव–संयम में हों तो कल्याणकारी। अतः शिव भक्ति का अर्थ है–शक्ति का संतुलन। आधुनिक मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है–तनाव। प्रतिस्पर्धा, अपेक्षाएं और असुरक्षा ने उसे अशांत बना दिया है। शिवरात्रि की रात्रि जागरण की रात्रि है, लेकिन यह बाह्य जागरण से अधिक आंतरिक जागरण है। जब साधक "ॐ नमः शिवाय" का जप करता है, तो वह अपने भीतर के कंपन को संतुलित करता है। यह पंचाक्षरी मंत्र मन, प्राण और चेतना को एकाग्र करता है। वैज्ञानिक शोध भी बताते हैं कि

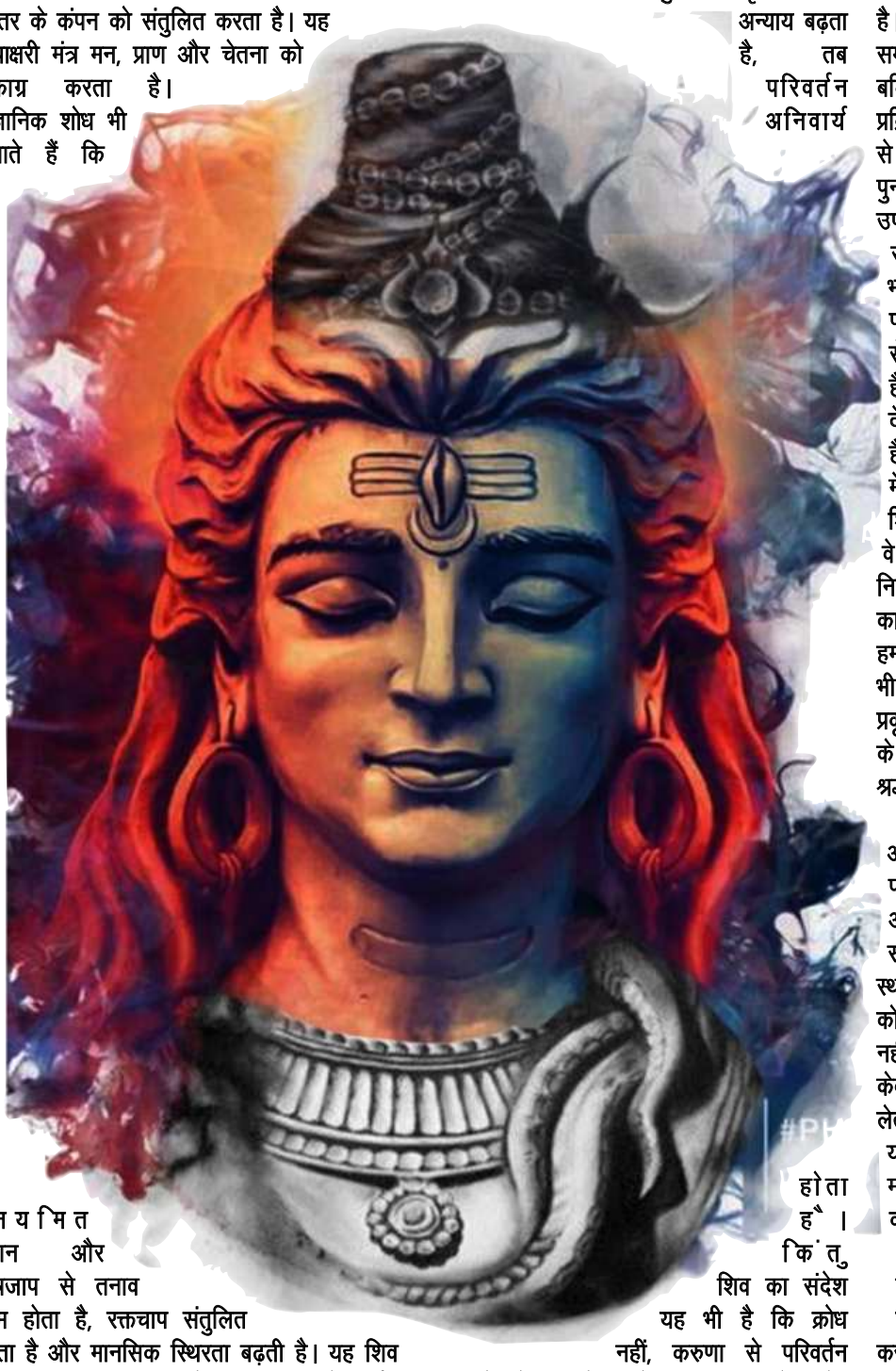

नियमित ध्यान और मंत्रजाप से तनाव कम होता है, रक्तचाप संतुलित होता है और मानसिक स्थिरता बढ़ती है। यह शिव साधना का प्रत्यक्ष प्रभाव है। शिव पुराण में वर्णित है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की निशीथ बेला में ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव हुआ। यह ज्योति केवल पत्थर की आकृति नहीं, बल्कि अनंत प्रकाश का प्रतीक है। शिवलिंग का अर्थ है–चिह्न, जो निराकार ब्रह्म का संकेत देता है। आधुनिक मनुष्य के लिए यह बोध आवश्यक है कि ईश्वर किसी सीमित रूप में बंधा नहीं है। वह ऊर्जा है, चेतना है, जो प्रत्येक कण में विद्यमान है। आज विश्व युद्ध और आतंकवाद की विभीषिका से जूझ रहा है। हिंसा की ज्वाला में मानवता झुलस रही है। शिव का तांडव केवल विनाश नहीं, बल्कि संतुलन का नृत्य है। जब अन्याय बढ़ता है, तब परिवर्तन अनिवार्य होता है। किंतु शिव का संदेश यह भी है कि क्रोध नहीं, करुणा से परिवर्तन संभव है। वे रुद्र हैं–दुःखों का हरण करने वाले। शिव भक्ति का चमत्कार यह है कि वह मनुष्य के भीतर करुणा, सहिष्णुता और क्षमा का विकास करती है। जब व्यक्ति बदलता है, तब समाज बदलता है और जब समाज बदलता है, तब विश्व में शांति का मार्ग प्रशस्त होता है। शिव और शक्ति का मिलन भी आधुनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह पुरुष और प्रकृति, चेतना और ऊर्जा, विचार और क्रिया का समन्वय है। आज परिवारों में विघटन, संबंधों में दूरी और जीवन में असंतुलन इसलिए है क्योंकि यह समरसता टूट रही है। शिवरात्रि हमें स्मरण कराती है कि संतुलन ही जीवन का आधार है। व्रत और उपवास का आध्यात्मिक महत्व भी आज समझने योग्य है। उपवास केवल भोजन त्याग नहीं, बल्कि इंद्रियों का संयम है। यह आत्मशुद्धि की प्रक्रिया है। जब व्यक्ति एक दिन के लिए भी भोगों से दूर रहता है, तो उसे अपनी आवश्यकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने का अवसर मिलता है। उपभोक्तावादी संस्कृति में यह अत्यंत आवश्यक साधना है। शिव भक्ति का सिद्ध प्रभाव उन असंख्य भक्तों के अनुभवों में दिखाई देता है, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी आस्था नहीं छोड़ी। सच्चे मन से की गई प्रार्थना व्यक्ति को आंतरिक शक्ति देती है। यह शक्ति उसे संकटों से जूझने का साहस देती है। चमत्कार बाहर नहीं, भीतर घटित होता है–जब निराशा आशा में बदलती है, भय विश्वास में और अशांति शांति में। आज आवश्यकता है कि शिव को केवल मंदिरों तक सीमित न रखा जाए। वे काठ, पत्थर या मूर्ति में नहीं, बल्कि भाव में निवास करते हैं। जब हम सत्य बोलते हैं, करुणा का व्यवहार करते हैं, प्रकृति की रक्षा करते हैं, तब हम शिव की आराधना करते हैं। पर्यावरण संरक्षण भी शिव भक्ति है, क्योंकि वे कैलाशवासी योगी हैं, प्रकृति के संरक्षक हैं। जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी के संतुलन की रक्षा करना ही शिव के प्रति सच्ची श्रद्धा है।

महाशिवरात्रि 2026 हमें यह संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम अपने भीतर के विष को पहचानें और उसे शिवचेतना में रूपांतरित करें। हम अपने जीवन में संयम, संतुलन और साधना को स्थान दें। हम क्रोध के स्थान पर क्षमा, अहंकार के स्थान पर विनम्रता और अशांति के स्थान पर ध्यान को अपनाएं। शिवत्व की प्राप्ति कोई दूर की वस्तु नहीं। यह हमारे भीतर ही सुप्त है। आवश्यकता केवल जागरण की है। जब मनुष्य स्वयं को जीत लेता है, तभी वह सच्चे अर्थों में विजयी होता है। यही आत्मयुद्ध है, यही शिव की साधना है। इस महाशिवरात्रि पर हम सब मिलकर यह प्रार्थना करें–

"हे नीलकंठ! हमारे भीतर के विष को शांत करो। हे महाकाल! हमें समय का सदुपयोग सिखाओ। हे शंकर! हमारे जीवन में कल्याण का संचार करो।" जब यह प्रार्थना सच्चे मन से होगी, तब निश्चित ही उसका प्रतिफल मिलेगा। क्योंकि शिव भाव के भूखे हैं। जहाँ निष्कपट श्रद्धा है, वहाँ शिव की कृपा अवश्य बरसती है। आधुनिक युग की जटिलताओं के बीच शिव भक्ति ही वह सेतु है, जो मनुष्य को स्वयं से, समाज को शांति से और विश्व को अमन से जोड़ सकती है। यही महाशिवरात्रि का सच्चा संदेश है–अंधकार से प्रकाश की ओर, अशांति से शांति की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर।

– ललित गर्ग

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

सबके लिए एआईः प्रमुख घटकों को समझिए, चुनौतियों से निबटिये और अपेक्षित लाभ पाइए

जहां तक इसके नीतिगत उपाय की बात है तो डेटा गोपनीयता और नियामक मुद्दों के लिए जिम्मेदार एआई ढांचा विकसित किया जा रहा है, जिसमें दिशा-निर्देश और शासन शामिल हैं। डिजिटल डिवाइड को टियर-2/3 शहरों में एआई शिक्षा विस्तार से पाटा जाएगा, जबकि स्वदेशी मॉडल विकास विदेशी निर्भरता कम करेगा।

कमलेश पांडे

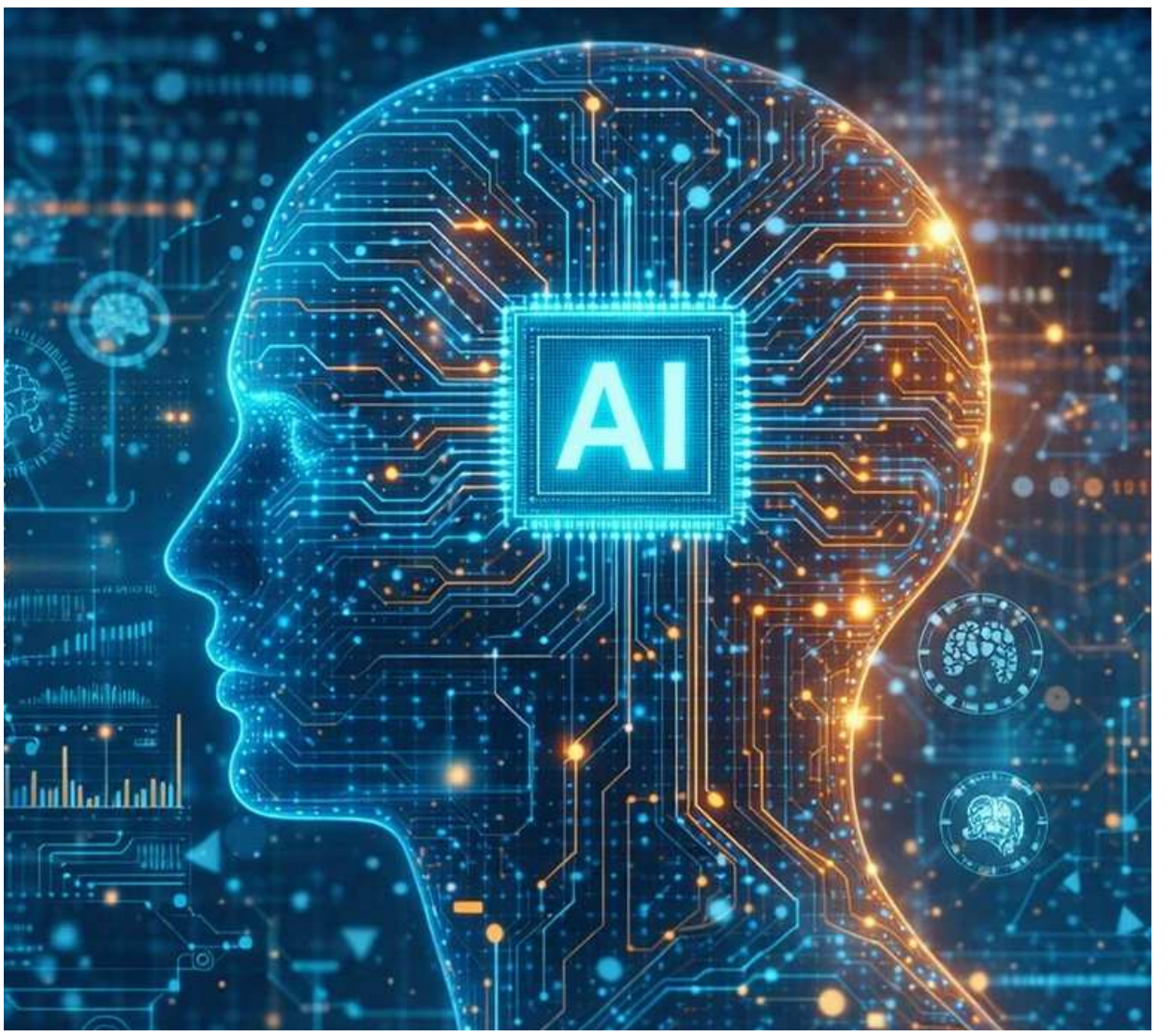

इंडिया एआई मिशन भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सुरक्षित, जिम्मेदार और सभी के लिए सुलभ बनाना है। इसका लक्ष्य देश में मजबूत एआई कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करना, घरेलू एआई तकनीकों को बढ़ावा देना और विदेशी निर्भरता को कम करना है। इस मिशन के तहत स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और शासन जैसे क्षेत्रों में एआई आधारित समाधान विकसित किए जा रहे हैं, साथ ही स्टार्टअप, नवाचार और शोध को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। हालांकि इसके सामने सीमित ळच्च क्षमता, उच्च लागत, डेटा गुणवत्ता की कमी, ऊर्जा खपत और कुशल मानव संसाधन की कमी जैसी चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से कंप्यूटिंग क्षमता बढ़ाने, डेटा प्लेटफॉर्म विक. सित करने, एआई शिक्षा का विस्तार करने और जिम्मेदार एआई ढाँचा तैयार करने पर जोर दिया जा रहा है। यह मिशन आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, तकनीकी नवाचार और समावेशी विकास को गति देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

ष्एआई सबके लिएष् भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसे इंडिया एआई मिशन के रूप में जाना जाता है। यह मिशन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को समावेशी, सुरक्षित और जिम्मेदार तरीके से सभी के लिए सुलभ बनाने पर केंद्रित है। इस मिशन का लक्ष्य भारत में मजबूत एआई कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर स्थापित करना है, जो एआई प्रणालियों के विकास, परीक्षण और तैनाती को समर्थन देगा। यह घरेलू एआई तकनीकों को बढ़ावा देकर विदेशी निर्भरता कम करने, डेटा गुणवत्ता सुधारने और नैतिक ।ष् प्रथाओं को प्रोत्साहित करने पर जोर देता है। समाज के सभी वर्गों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए एआई लाभ सुनिश्चित करना इसका मूल सिद्धांत है।

इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैः– पहला, कंप्यूटिंग क्षमता यानी हाई–एंड ळच्च क्लस्टर के माध्यम से ।ष् मॉडल ट्रेनिंग को सक्षम बनाना। दूसरा, सामाजिक अनुप्रयोग यानी स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और शासन जैसे क्षेत्रों में एआई–संचालित समाधान विकसित करना। और तीसरा, स्टार्टअप और नवाचार समर्थन यानी शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करना, उद्योग सहयोग बढ़ाना और स्टार्टअप्स को फंडिंग प्रदान करना। चतुर्थ, सामाजिक प्रभाव यानी यह मिशन एआई को लोकतांत्रिक बनाकर एआई वित ।सस की अवधारणा को साकार करता है, ताकि यह नौकरियों को प्रभावित न करे बल्कि सतत विकास लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त करने में मदद करे। हालिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में भी इसकी समावेशी पहुंच पर जोर दिया गया।

इसे भी पढ़ेंरू श्महत्वाकांक्षा और जिम्मेदारी का संगमश, एआई क्रांति में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है भारत, पीएम मोदी का संदेश

इंडिया एआई मिशन की प्रमुख चुनौतियां के बारे में जानिए

हालांकि इंडिया एआई मिशन की प्रमुख चुनौतियां बुनियादी ढांचे, डेटा प्रबंधन और मानव संसाधन से जुड़ी हैं। ये चुनौतियां मिशन के समावेशी लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा बन सकती हैं। इसकी राह की तकनीकी बाधाएं निम्नवत हैं :– सीमित ळच्च क्षमता और उच्च लागत एआई मॉडल ट्रेनिंग को कठिन बनाती है, जबकि क्लाउड कंप्यूटिंग अवसंरचना की कमी तैनाती को प्रभावित करती है। डेटा गुणवत्ता और विविधता, खासकर इंडिक भाषाओं के लिए, अपर्याप्त है। ऊर्जा खपत भी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि डेटा सेंटरों की मांग तेजी से बढ़ रही है।

जहां तक नीतिगत व नियामक मुद्दे की बात है तो डेटा गोपनीयता कानूनों का अभाव व्यक्तिगत डेटा दुरुपयोग की चिंता बढ़ाता है, और भू–राजनीतिक प्रतिबंध ळच्च जैसे हार्डवेयर तक पहुंच सीमित करते हैं। डिजिटल डिवाइड ग्रामीण क्षेत्रों में एआई पहुंच को रोकता है।

नौकरी विस्थापन का खतरा ठच्च और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में है। वहीं मानव संसाधन की भी कमीहै। खासकर कुशल ।ष् विशेषज्ञों की भारी कमी है, जहां केवल 11: कार्यबल उन्नत डिजिटल कौशल से लैस है। प्रशिक्षण अंतराल को पाटना समय लेगा। नैतिक एआई उपयोग के लिए नियामक ढांचे की जरूरत है।

रु इंडिया एआई मिशन के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों का समाधान ऐसे कीजिए लिहाजा इंडिया ।ष् मिशन अपने सम्मुख उपस्थित चुनौतियों का समाधान संरचित घटकों और रणनीतियों के माध्यम से करेगा। यह तकनीकी, नीतिगत और मानव संसाधन संबंधी बाधाओं को दूर करने पर केंद्रित है।जहां तक तकनीकी समाधान की बात है तो ळच्च क्षमता की कमी को 10,000+ ळच्च वाले कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर से दूर किया जाएगा, जिसमें सार्वजनिक–निजी भागीदारी शामिल है। जबकि डेटा गुणवत्ता के लिए इंडिया ।ष् डेटासेट प्लेटफॉर्म गैर–व्यक्तिगत डेटा तक अबाधित पहुंच प्रदान करेगा, विशेष रूप से इंडिक भाषाओं पर फोकस के साथ। ऊर्जा खपत को नवीकरणीय स्रोतों और ऊर्जा–कुशल ।ष् एल्गोरिदम से प्रबंधित करने की योजना है।

जहां तक इसके नीतिगत उपाय की बात है तो डेटा गोपनीयता और नियामक मुद्दों के लिए जिम्मेदार ।ष् ढांचा विकसित किया जा रहा है, जिसमें दिशा–निर्देश और शासन शामिल हैं। डिजिटल डिवाइड को टियर–2/3 शहरों में ।ष् शिक्षा विस्तार से पाटा जाएगा, जबकि स्वदेशी मॉडल विकास विदेशी निर्भरता कम करेगा। नौकरी विस्थापन पर सामाजिक अनुप्रयोगों के जरिए स्वास्थ्य, कृषि जैसे क्षेत्रों में नए अवसर सृजित होंगे। वहीं, मानव संसाधन विकास के दृष्टिगत कौशल कमी को भविष्य कौशल पहल से दूर किया जाएगा, जिसमें ।ष् प्रशिक्षण कार्यक्रम और स्टार्टअप फंडिंग शामिल है। शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करने हेतु नवाचार केंद्र स्थापित होंगे, जिससे 11: डिजिटल कौशल अंतर को कम किया जा सकेगा।

रु इंडिया एआई मिशन से अपेक्षित आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी क्षेत्रों से जुड़े बहुआयामी लाभ

वास्तव में इंडिया ।ष् मिशन से भारत को आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी क्षेत्रों में बहुआयामी लाभ अपेक्षित हैं।

यह मिशन एआई को लोकतांत्रिक बनाकर समावेशी विकास को गति देगा। जहां तक आर्थिक लाभ की बात है तो यह मिशन स्वदेशी एआई मॉडल विकसित कर विदेशी निर्भरता कम करेगा, जिससे स्टार्टअप्स को फंडिंग और कंप्यूटिंग संसाधन मिलेंगे। इससे ।ष् इंडस्ट्री में रोजगार सृजन होगा और ळक्च में योगदान बढ़ेगा, विशेष रूप से कृषि, स्वास्थ्य और खुदरा क्षेत्रों में कार्यकुशलता सुधार के जरिए।

जहां तक सामाजिक प्रभाव की बात है तो स्वास्थ्य में पूर्वानुमानित निदान, कृषि में फसल प्रबंधन और शिक्षा में वैयक्तिकृत सीखने जैसे अनुप्रयोग जीवन स्तर सुधारेंगे। जबकि इंडिक भाषाओं पर आधारित डेटासेट से ग्रामीण और हाशिए वाले समुदायों को समान पहुंच मिलेगी।वहीं तकनीकी प्रगति के तहत 10,000+ ळच्च इंफ्रास्ट्रक्चर से नवाचार केंद्र मजबूत होंगे, जिससे भारत वैश्विक ।ष् नेतृत्व प्राप्त करेगा। क्योंकि जिम्मेदार ।ष् ढांचे से नैतिक उपयोग सुनिश्चित होगा।

– कमलेश पांडेय
वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक
(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

भारत-ब्रिटेन हरित हाइड्रोजन मानकों और सुरक्षा प्रोटोकॉल सम्मेलन में सुरक्षित हरित हाइड्रोजन उत्पादन के विस्तार के लिए सहयोग को आगे बढ़ाया गया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : भारत–ब्रिटेन हरित हाइड्रोजन मानक और सुरक्षा प्रोटोकॉल सम्मेलन का आयोजन 27 फरवरी 2026 को नई दिल्ली में किया गया। इसमें दोनो देशों की सरकार, उद्योग, शिक्षा जगत, मानक निकायों, परीक्षण संस्थानों, अनुसंधान संगठनों और नियामक एजेंसियों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया ताकि भारत के राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत हरित हाइड्रोजन के सुरक्षित उपयोग पर सहयोग को मजबूत किया जा सके। यह सम्मेलन राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के समर्थन में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) के अंतर्गत स्थापित राष्ट्रीय हाइड्रोजन सुरक्षा केंद्र (एनसीएचएस) ने भारत में ब्रिटिश उच्चायोग और डब्ल्यूआरआई इंडिया के सहयोग से आयोजित किया गया था। इसमें हरित हाइड्रोजन मूल्य श्रृंखला में नियामक ढांचे, अंतरराष्ट्रीय मानकों और सुरक्षा प्रोटोकॉल पर महत्वपूर्ण चर्चाएँ हुईं। इनमें उत्पादन, भंडारण, परिवहन और अंतिम उपयोग अनुप्रयोग शामिल हैं। उद्घाटन सत्र का प्रारंभ राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान के महानिदेशक मोहम्मद रिहान के संदर्भ–निर्धारण संबंधी संबोधन से हुआ। इसके बाद नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के मिशन निदेशक अभय बकरे, भारत में ब्रिटिश उच्चायोग के प्रथम सचिव (व्यापार) जिनूस शरियाती, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड के सचिव अंजन कुमार मिश्रा और भारत में ब्रिटिश उच्चायोग के प्रथम सचिव (जलवायु और ऊर्जा) लौरा आयलेट ने विशेष संबोधन दिए।

भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय के वैज्ञानिक सचिव परविंदर मैनी ने मुख्य भाषण देते हुए, हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों के बड़े पैमाने पर उपयोग को सक्षम बनाने के लिए मजबूत सुरक्षा ढांचे, मानक विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर बल दिया। सम्मेलन का एक प्रमुख आकर्षण हाइड्रोजन सुरक्षा और मानकों के लिए जिम्मेदार राष्ट्रीय नियामकों की भागीदारी थी। पेट्रोलियम और विस्फोटक सुरक्षा संगठन (पीईएसओ) ने हाइड्रोजन प्रणालियों के लिए सुरक्षा अनुपालन, जोखिम मूल्यांकन और आपदा प्रबंधन पर नियामक दृष्टिकोण साझा किया।

भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने विकसित हो रहे मानक ढांचे और भारतीय हाइड्रोजन मानकों को अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप बनाने के लिए चल रहे प्रयासों पर जानकारी प्रस्तुत की। सम्मेलन के तकनीकी सत्रों में उद्योग, शिक्षा जगत और अनुसंधान संस्थानों के प्रख्यात विशेषज्ञों द्वारा हाइड्रोजन मूल्य श्रृंखला में सुरक्षा प्रथाओं पर प्रस्तुतियाँ और चर्चाएँ शामिल थीं। वक्ताओं में सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स, एनटीपीसी लिमिटेड, ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, अरूप, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड, सीएसआईआर–राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, कोचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास के प्रतिनिधि शामिल थे। सत्रों में हाइड्रोजन के अंतिम उपयोग अनुप्रयोगों में सुरक्षा प्रथाओं, हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण और परिवहन प्रणालियों के सुरक्षित डिजाइन और संचालन, जोखिम मूल्यांकन पद्धतियों, घटना केस स्टडी और हाइड्रोजन सुरक्षा के लिए उन्नत सेंसर प्रौद्योगिकियों और एआई–सक्षम निगरानी जैसे उभरते नवाचारों को शामिल किया गया।

सम्मेलन का समापन भारत और यूके द्वारा मानकों के विकास, नियामक क्षमता निर्माण और सुरक्षा ढाँचों पर सहयोग को मजबूत करने की साझा प्रतिबद्धता के साथ हुआ, ताकि हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों के विश्वसनीय और बड़े पैमाने पर उपयोग को समर्थन मिल सके।

सम्मेलन का समापन भारत और ब्रिटेन के बीच सुदृढ़ मानकों, नियामक ढाँचों और सुरक्षा प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए सहयोग को मजबूत करने की साझा प्रतिबद्धता के साथ हुआ ताकि हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों के सुरक्षित और व्यापक स्तर पर उपयोग को बढ़ावा दिया जा सके। उम्मीद है कि ये विचार–विमर्श राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत चल रहे प्रयासों में योगदान देंगे। इसका उद्देश्य एक व्यापक सुरक्षा प्रणाली का निर्माण करना और भारत में एक विश्वसनीय और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी हरित हाइड्रोजन क्षेत्र के विकास को सुगम बनाना है।

सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर ने नेतृत्व, नवाचार और कल्याण में महिलाओं की भूमिका पर प्रेरक वार्ता के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 का आयोजन किया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर– राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर– एनआईएससीप.ीआर), नई दिल्ली ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धियों और योगदान को सम्मानित करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 6 मार्च 2026 को एनआईएससीपीआर में आयोजित किया गया। इसमें वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और कर्मचारियों ने वैज्ञानिक प्रगति और राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देने के लिए एक साथ भाग लिया।

सीएसआईआर–एनआईएससीप.ीआर की निदेशक डॉ. गीता वाणी रायसम ने स्वागत भाषण में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व र प्रकाश डाला और वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिला वैज्ञानिक विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं और विज्ञान में महिलाओं के लिए समावेशी और सहायक वातावरण बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

मुख्य अतिथि, डॉ. विभा मल्होत्रा घ्साहनी, वैज्ञानिक श्एचश और टीएमडी प्रमुख, सीएसआईआर मुख्यालय ने सीएसआईआररू विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार विकास और प्रबंधन विषय पर एक ज्ञानवर्धक भाषण दिया। उन्होंने भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाने में सीएसआईआर की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और नेतृत्व पर जोर दिया।

नई दिल्ली के अटल बिहारी वाजपेयी आयुर्वेद संस्थान और डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में मानसिक स्वास्थ्य उत्कृष्टता केंद्र की मनोचिकित्सा ओपीडी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनू चंद्र ने एक आकर्षक और प्रेरणादायक प्रस्तुति दी।

गिव टू गेन शीर्षक से अपने भाषण में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाएं हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने की क्षमता रखती हैं और वे केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं हैं।

उन्होंने बताया कि महिलाएं विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देते हुए पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन में सफलतापूर्वक संतुलन बनाए हुए हैं।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के स्वतः हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप विदेश मंत्रालय ने थाईलैंड में नियोक्ता द्वारा पिछले कई महीनों से यातना झेल रहे छह भारतीय श्रमिकों को मुक्त कराया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के स्वतः हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप विदेश मंत्रालय ने त्वरित कार्रवाई करते हुए थाईलैंड में पिछले छह महीनों से अपने नियोक्ता द्वारा यातना झेल रहे छह भारतीय श्रमिकों को छुड़ाया है। विदेश मंत्रालय को एनएचआरसी के 20 फरवरी 2026 को पत्र भेजे जाने के अगले ही दिन ही उनमें से चार श्रमिकों को भारत वापस लाया गया। वे बैंकॉक से अपने नियोक्ता द्वारा बुक की गई उड़ान से कोलकाता पहुंचे। विदेश मंत्रालय के दक्षिणी प्रभाग ने सूचित किया है कि वह शेष दो बचाए गए श्रमिकों की स्वदेश वापसी के मामले को थाई आव्रजन अधिकारियों के साथ आगे बढ़ा रहा है क्योंकि वे अपने वीजा की अवधि से अधिक समय तक रुके हुए थे।

गौरतलब है कि 20 फरवरी 2026 को आयोग ने एक मीडिया रिपोर्ट का संज्ञान लेते हुए विदेश मंत्रालय से पूछा था कि क्या वह छह बंधक श्रमिकों के परिवारों को कोई सहायता प्रदान कर सकता है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) से सूचना मिलते ही विदेश मंत्रालय के दक्षिणी प्रभाग ने थाई अधिकारियों से उन्हें छुड़ाने का अनुरोध किया और उस कंपनी के मालिक से भी संपर्क किया, जहां कथित तौर पर ये छह श्रमिक काम कर रहे थे। मीडिया में 17 फरवरी 2026 को एक वीडियो सामने आया था जिसमें ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले के मजदूरों ने अपनी दुर्दशा बयां की थी। बैंकॉक के पास एक कारखाने में उनके मालिक ने उन्हें बंधक बनाकर रखा था और उन्हें शारी.रिक एवं मानसिक यातनाएं दी जा रहीं थी।

उन्हें प्लाईवुड कारखाने में बिना वेतन और उचित भोजन के प्रतिदिन 12 घंटे काम करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, उनके मालिक ने उनके पासपोर्ट भी जब्त कर लिए थे।

प्रधानमंत्री ने पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति के अपमान और संथाल संस्कृति के अनादर की निंदा की

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा राष्ट्रपति जी के अपमान और संथाल संस्कृति के साथ किए गए लापरवाही भरे व्यवहार की कड़ी निंदा की है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह घटना शर्मनाक है और ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।

उन्होंने कहा कि जो भी लोकतंत्र और आदिवासी समुदायों के सशक्तिकरण में विश्वास करता है, वो इस घटना से बहुत निराश है। प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रपति जी खुद आदिवासी समुदाय से हैं, और उन्होंने जो दर्द और पीड़ा व्यक्त की है उसने भारत के लोगों को बहुत दुःखी किया है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह कभी खुशी कभी गम लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आपक. ो निजी जीवन से लेकर करियर–कारोबार तक में उतार–चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। हालांकि सप्ताह की शुरुआत सामान्य रहने वाली है। इस दौरान व्यक्तिगत और पेशेवेर रूप से खुद को मजबूत पाएंगे। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। युवाओं का अधिकांश समय मौज–मस्ती करते हुए बीतेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। सप्ताह के मध्य में आपको करियर–कारोबार में कुछ अप्रत्याशित बदलाव को झेलना पड़ सकता है।

इस दौरान नौकरीपेशा लोगों के सिर पर अचानक से अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ आ सकता है। जिसे पूरा करने के लिए आपको अधिक समय और ऊर्जा खर्च करने की आवश्यकता रहेगी।

वृषभ

वृष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी है। वृष राशि के जो जातक किसी कार्य विशेष के लिए बीते कुछ समय से लगातार प्रयासरत हैं, उन्हें इस सप्ताह भी उससे जुड़ी सफलता के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले उनका पूर्वार्ध थोड़ा राहत भरा रहने वाला है।

ऐसे में इस राशि के जातकों को अपने करियर–कारोबार और जीवन से जुड़े अहम कार्यों को इसी दौरान करने का प्रयास करना चाहिए। सप्ताह के मध्य में किसी व्यक्ति विशेष से मेल–मुलाकात होगी। जिसकी मदद से अटके कार्यों में धीमी गति से ही लेकिन प्रगति होती नजर आएगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में न सिर्फ कार्यक्षेत्र से जुड़ी बल्कि घर–परिवार से संबंधित समस्याएं भी आपकी परेशानी का कारण बन सकती हैं। इस दौरान पैतृक संपत्ति अथवा किसी जमीन–जायदाद को लेकर विवाद हो सकता है। अचानक से जीवन में तमाम तरह की समस्याएं सामने आने से आपका मन थोड़ा विचलित रह सकता है। हालांकि सुखद पहलू यह है कि इस दौरान आपके संगी–साथी आपकी ढाल बनेंगे और आपके साथ साए की तरह बने रहेंगे।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों को इस सप्ताह सौभाग्य का पूरा साथ मिलेगा। यदि आप किसी कार्य विशेष के लिए लंबे समय से प्रयासरत थे तो उम्मीद का दामन बिल्कुल न छोड़ें क्योंकि इस सप्ताह उसमें आ रही बाधाएं स्वतरू दूर होती हुई नजर आएंगी। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय नौकरीपेशा लोगों के लिए अनुकूल रहने वाला है।

इस दौरान आपके शुभचिंतक आपको नेक सलाह देते हुए नजर आएंगे, जिस पर अमल करके आप अपनी चीजों को सुव्यवस्थित कर सकते हैं। सप्ताह के मध्य में किसी तीर्थ स्थान पर जाने का अचानक प्रोग्राम बन सकता है। इस पूरे सप्ताह घरेलू महिलाओं का मन धार्मिक–कार्यों में खूब रमेगा। किसी धार्मिक–आध्यात्मिक व्यक्ति की विशेष कृपा आप पर बरस सकती है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आपके लिए सप्ताह के पूर्वार्ध के मुक. ाबले उत्तरार्ध ज्यादा शुभ रहने वाला है। इस दौरान आप आप समझदारी के साथ अपने पैसे का सही जगह निवेश करते हैं तो आपको उससे भविष्य में बड़ा लाभ मिल सकता है। उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लेकर आएगा।

कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिश्रित फलदायक रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातक. ों को किसी भी फैसले को लेते समय जल्दबाजी करने से बचना चाहिए। रिश्ते–नाते में मिठास बनी रहे और किसी प्रकार की गलतफहमी न पैदा हो इसके लिए स्वजनों के साथ संवाद बनाए रखें।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार के सिलसिले में बड़े फैसले लेने पड़ सकते हैं। ऐसा करते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर को मिलाकर चलें। यदि कार्यक्षेत्र पर हालात आपके अनुकूल नहीं हैं तो आप उससे बजाय भागने के उसे बेहतर बनाने का प्रयास करें। भूलकर भी आवेश में आकर नौकरी में बदलाव जैसा फैसला लेने से बचें। सप्ताह के मध्य में घरेलू समस्याओं के चलते आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। इस दौरान आपको आपके विरोधी आप पर हावी होने तथा आपके बनते काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातक. ों को अपनी ऊर्जा, धन और समय का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। सप्ताह की शुरुआत में आपके सिर पर अचानक से कुछ बड़े खर्च आ सकते हैं। इस दौरान कार्य विशेष के लिए लंबी दूरी की यात्रा पर भी अचानक निकलना पड़ सकता है। यात्रा सुखद और नये संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले पूर्वार्ध का समय ज्यादा अनुकूल रहने वाला है। ऐसे में आपको अपने कारोबार से जुड़े बड़े फैसले इसी दौरान करने चाहिए। सप्ताह के मध्य में आप कुछ चीजों को लेकर खुद को असमंजस की स्थिति में पा सकते हैं। ऐसे में इस दौरान कोई बड़ा फैसला लेते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। नौकरीपेशा जातकों इस सप्ताह अपने कार्य दूसरों के भरोसे छोड़ने की बजाय स्वयं बेहतर तरीके से पूरे करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा पूर्व में की गई न सिर्फ आपकी मेहनत बेकार जा सकती है, बल्कि वरिष्ठ अधिकारियों की डांट भी सुननी पड़ सकती है।

कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। यदि आप चाहते हैं कि आपको जीवन में मनचाही सफलता और खुशियां मिले तो आपको अपने कार्य और व्यवहार में आमूलचूल बदलाव लाना होगा और अपने शुभचिंतकों को नाराज करने से बचना होगा। इस सप्ताह आपकी किसी बात या व्यवहार से आपके अपने नाराज हो सकते हैं। वाद–विवाद बढ़ने पर वर्षों से बने रिश्ते में दरार आ सकती है। करियर–कारोबार से लेकर घर–परिवार में सब कुछ अच्छा बना रहे इसके लिए दूसरों से अपेक्षा करने करने की बजाय आपको खुद ही आगे बढ़कर प्रयास करना होगा।

यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में कनिष्ठ लोगों के साथ रुखा व्यवहार न करें और अपने वरिष्ठ लोगों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। यदि आप व्यवसायी हैं तो शार्टकट तरीके से लाभ कमाने से बचें और कागजी काम पूरे करके रखें। यदि आप पार्टनरशिप में व्यवसाय करते हैं तो धन का लेनदेन सावधानी के साथ करें।

तुला

तुला राशि के जातकों के लिए करियर और कारोबार की दृष्टि से यह सप्ताह उत्तम और रिश्ते–नाते की दृष्टि से मध्यम फलदायी रहने वाला है।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार से जुड़ा कोई बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। इस सप्ताह तुला राशि का नौकरीपेशा जातक हो या फिर व्यवसाय से जुड़ा कारोबारी, वह अपना शत प्रतिशत अपने कार्य में देता हुआ नजर आएगा।

खास बात कि उसके प्रयासों को सौभाग्य का भी पूरा साथ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी और सीनियर आपके कामकाज की खुले मन से प्रशंसा करते हुए नजर आएंगे। सप्ताह के अंत तक आपको बड़ा पद अथवा अहम जिम्मेदारी मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से किसी नये कारोबार की शुरुआत करने अथवा किसी बड़ी डील को फाइनल करने के लिए प्रयासरत थे तो आपकी यह मनोकामना इस सप्ताह पूरी हो सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी–रोजगार के लिए प्रयासरत थे तो सप्ताह के उत्तरार्ध में आपकी यह मनोकामना पूरी हो सकती है।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए है। इस सप्ताह आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शुभता–सफलता की प्राप्ति होगी। इस सप्ताह आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। करियर–कारोबार में मनचाही प्रगति होती नजर आएगी। कार्यक्षेत्र में आपको सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। व्यवसाय में अच्छा मुनाफा कमाएंगे। यदि आपके कारोबार में बीते समय से कोई अड़चन आ रही थी इस सप्ताह वह किसी व्यक्ति विशेष की मदद से दूर हो जाएगी। मार्केट में आपकी साख बढ़ेगी। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो आप उसके विस्तार की योजना पर काम करेंगे। आपकी योजना को साकार रूप देने के लिए आपके शुभचिंतक और परिजन पूरी मदद करेंगे। इस संबंध में घर–परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य की सलाह लाभदायी साबित होगी। यह सप्ताह पठन–पाठन एवं शोध से जुड़े कार्यों को करने वालों के लिए अत्यधिक शुभ साबित होगा।

धनु

धनु राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह जीवन के नये अवसरों को लेकर आने वाला है, लेकिन उसका लाभ उठाने के लिए आपको आलस्य और आशंका को त्याग कर कठिन परिश्रम और प्रयास करना होगा। इस सप्ताह यदि आप अपने धन, समय और उर्जा का सही दिशा में उपयोग करते हैं तो आपको आशा से अधिक सफलता और लाभ मिल सकता हैं। वहीं इसकी अनदेखी करने पर बनते काम बिगड़ जाने से मन में निराशा के भाव जाग सकते हैं। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह खुले हाथ धन खर्च करने से बचना चाहिए अन्यथा सप्ताह के अंत तक उन्हें उधार मांगने की नौबत आ सकती है। व्यवसाय की दृष्टि से यह सप्ताह आपके लिए मिश्रित फलदायी साबित होने वाला है। इस सप्ताह आपको कारोबार में लाभ तो होगा लेकिन साथ ही साथ खर्च की अधिकता भी बनी रहेगी। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह मौसमी बीमारी को लेकर सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। अपनी दिनचर्या और खानपान सही रखें अन्यथा पेट संबंधी दिक्कतें हो सकती है। परीक्षा–प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को सप्ताह के मध्य में किसी सुखद समाचार की प्राप्ति संभव है।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह उतार–चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आप अपने करियर–कारोबार में आ रही अड़चनों को लेकर चिंतित रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र और कारोबार के अलावा निजी जीवन से जुड़ी समस्याएं भी आपकी बड़ी चिंता का कारण बनेंगी। हालांकि जीवन के कठिन समय में आपके शुभचिंतक एवं परिजन काफी मददगार साबित होंगे और काफी हद तक आप इन समस्याओं का समाधान खोजने में भी कामयाब होंगे। सप्ताह के मध्य में किसी भी कार्य को करते समय विशेष सावधानी बरतें। इस दौरान जल्दबाजी या असमंजस की स्थिति में लिया गया निर्णय आपके लिए हानिकारक साबित हो सकता है। इस दौरान स्वजनों के साथ बात–व्यवहार करते समय विनम्रता से पेश आएं अन्यथा लंबे समय से बने हुए रिश्तों में दरार आ सकती है। इस सप्ताह खर्च की अधि. कता के चलते आपका बजट थोड़ा गड़बड़ा सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध में करियर–कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है।

कुंभ

जीवन में आने वाली छोटी–मोटी दिक्कतों को यदि नजरअंदाज कर दें तो कुंभ राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह शुभ साबित होगा। इस सप्ताह आपको आपकी मेहनत का पूरा फल प्राप्त होगा। करियर और कारोबार की दिशा में किए गये प्रयास सफल होंगे और आपके पद एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए हुए है। इस सप्ताह आपकी झोली में कोई बड़ा पद गिर सकता है। सत्तापक्ष से जुड़े लोगों के साथ आपका मेल–मिलाप बढ़ेगा। आपके मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। आप अपनी सूझबूझ से अपने विरोधियों पर काबू पाने में कामयाब होंगे। कुंभ राशि के जो जातक तकनीक के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ साबित होगा। इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक का कारोबार करने वालों को बड़े लाभ की प्राप्ति होगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में किसी वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्ति से कार्य विशेष के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय जहां अनुकूल तो वहीं उत्तरार्ध थोड़ा प्रतिकूल रहने वाला है। ऐसे में मीन राशि के जातकों को जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों सप्ताह की शुरुआत में ही निबटाने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप बेरोजगार हैं तो आपको इसी दौरान पूरे मनोयोग से रोजी–रोजगार के लिए प्रयास करना चाहिए। इस दौरान किसी व्यक्ति विशेष की मदद से भूमि–भवन से जुड़े विवाद का समाधान निकल सकता है। मीन राशि के जातकों को इस सप्ताह इस बात का पूरा ख्याल रखना होगा कि उनकी बात से ही बात बनेगी और बात से ही बात बिगड़ भी सकती है।

ऐसे में अपना काम निकलवाने के लिए लोगों की प्रशंसा करने में जरा भी कंजूसी न करें और सभी के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। सप्ताह के पूर्वार्ध में आपके घर में कोई धार्मिक अथवा मांग. लिक कार्यक्रम संपन्न हो सकता है। इस दौरान घरेलू महिलाओं का अधिकांश समय पूजा–पाठ में बीतेगा।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल से पहले गाज़ियाबाद में गरम सट्टा बाजार, 10 के 800 के लालच में फंस रहे युवा

गाज़ियाबाद में मैच के साथ चल रहा करोड़ों का अवैध सट्टा, कर्ज और आत्महत्या तक पहुंच रहे युवा" क्रिकेट का नशा या बर्बादी का खेल?

गाज़ियाबाद सिटी

टी–20 वर्ल्ड कप के फाइनल मुकाबले से पहले गाज़ियाबाद शहर में अवैध सट्टा बाजार एक बार फिर से गरम होता दिखाई दे रहा है। शहर के कई इलाकों में खासकर कोतवाली क्षेत्र मे क्रिकेट मैच के नाम पर बुकी द्वारा अवैध तरीके से लाइन खोलकर करोड़ों रुपये का खेल खेला जा रहा है। बताया जा रहा है कि बाजार में 10 रुपये के बदले 800 रुपये तक मिलने का लालच दिया जाता है, जिसका झांसा देकर युवाओं, महिलाओं और यहां तक कि बच्चों को भी इस जाल में फंसाया जा रहा है।

क्रिकेट का यह ऐसा नशा बन चुका है जो कई लोगों को कर्ज में डुबो देता है और कई परिवारों को बर्बादी की कगार पर पहुंचा देता है। हाल ही में ऐसा ही एक मामला शहर के कोतवाली क्षेत्र में सामने आया, जहां गौरव नामक व्यक्ति ने ट्रेन के सामने कूदकर अपनी जान दे दी। बताया जा रहा है कि वह क्रिकेट मैच में लगभग 25 लाख रुपये हार चुका था और कर्ज के बोझ से परेशान था।

इसी तरह एक अन्य मामला दलीप नाम के व्यक्ति का भी सामने आया, जिसे क्रिकेट सट्टे में भारी नुकसान के कारण अपनी दुकान तक बेचनी पड़ी और अंततः वह मुंबई भागने को मजबूर हो गया। ऐसे कई उदाहरण शहर में चर्चा का विषय बने हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद सट्टा बाजार पर प्रभावी रोक लगती नहीं दिखाई दे रही है।

सूत्रों के अनुसार, अवैध सट्टेबाजी का यह नेटवर्क बेहद संगठित तरीके से काम करता है। मैच के दौरान बुकी बाजार का भाव देखकर लाइन खोलते हैं और युवाओं को लालच दिया जाता है कि "भारत तो जीतेगा ही।" खेल यहीं से शुरू होता है, लेकिन जब परिणाम उल्टा होता है तो कई लोग आर्थिक रूप से बर्बाद हो जाते हैं।

सबसे हैरानी की बात यह है कि यह सट्टा केवल बड़े गिरोह तक सीमित नहीं है, बल्कि शहर के कई

छोटे–छोटे कारोबारियों तक फैल चुका है। जानकारी के अनुसार परचून की दुकान, किराना स्टोर, टेलर मास्टर, जैकेट बेचने वाले, टेंट कारोबारी, प्रॉपर्टी डीलर, कॉस्मेटिक की दुकानें, कपड़ों के व्यापारी, पार्षद यहां तक कि फास्ट फूड और चाउमीन बेचने वाले तक इस अवैध धंधे में क्रिकेट लाइन खोलकर बैठे हुए हैं। इनके संपर्क में बड़ी संख्या में युवा और नाबालिग आ जाते हैं, जो धीरे–धीरे इस जाल में फंसते चले जाते हैं।

क्रिकेट सट्टे का यह खेल बेहद खतरनाक तरीके से चलता है। मैच के दौरान प्रति बॉल भाव लगाया जाता है, जबकि मैच जीतने वाली टीम का अलग भाव होता है।

बताया जा रहा है कि शहर के घंटाघर कोतवाली क्षेत्र और ओल्ड गाज़ियाबाद के कई हिस्सों में ऐसे समूह सक्रिय हैं, जो मैच के दौरान पुलिस की गतिविधियों पर भी नजर रखते हैं।

स्थानीय लोगों का कहना है कि कुछ जगहों पर तो सट्टेबाज कोतवाली के अंदर पुलिस स्टाफ द्वारा ही इनफार्मेशन लीक की जाती है ओर थाने के आसपास पान गुटखे की दुकान मे बैठकर भी पुलिस की रेकी भी करते हैं ताकि किसी भी संभावित कार्रवाई की सूचना तुरंत मिल सके। यदि कहीं रेड की संभावना होती है तो तुरंत नेटवर्क को अलर्ट कर दिया जाता है।

एक और चौंकाने वाली बात यह सामने आ रही है कि कई बार बुकी गाज़ियाबाद में मौजूद भी नहीं होते। वे ऑनलाइन नेटवर्क के जरिए चंडीगढ़ या अन्य शहरों से लाइन चलाते हैं, जबकि स्थानीय स्तर पर केवल एजेंट या संपर्क व्यक्ति ही मौजूद रहता है। मैच खत्म होने के बाद करोड़ों रुपये का लेनद.ेन ऑनलाइन माध्यम से किया जाता है।

सूत्रों का यह भी कहना है कि कुछ बड़े बुकी मैच खत्म होने के बाद भारी कमाई लेकर दुबई जैसे देशों में जाकर ऐश करते हैं। यह सब पुलिस के संज्ञान में होने के बावजूद अवैध सट्टेबाजी का यह कारोबार रुकने का नाम नहीं ले रहा है।

गौरतलब है कि जुआ और सट्टेबाजी पर रोक लगाने के लिए कानून मौजूद है, लेकिन गाज़ियाबाद में गेमलिंग एक्ट का असर बुकी नेटवर्क पर दिखाई नहीं देता। स्थानीय लोगों का आरोप है कि कई बार बड़े व्यापारी, प्रभावशाली लोग और राजनीतिक पहुंच रखने वाले व्यक्ति ऐसे मामलों में पक्ष हेतु थाने तक पहुंच जाते हैं, जिसके बाद कार्रवाई ठंडी पड़ जाती है।

अब 8 तारीख को शाम 7 बजे होने वाले ज–20 वर्ल्ड कप फाइनल मुकाबले को लेकर शहर में एक बार फिर सट्टा बाजार सक्रिय होता दिखाई दे रहा है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या पुलिस इस बार इस अवैध कारोबार पर सख्त कार्रवाई करेगी या फिर सबूतों के अभाव में यह नेटवर्क पहले की तरह ही चलता रहेगा।

शहर के जागरूक नागरिकों का कहना है कि यदि समय रहते इस अवैध सट्टेबाजी पर रोक नहीं लगी तो यह नशा आने वाली पीढ़ी को आर्थिक और सामाजिक बर्बादी की ओर धकेल सकता है। इसलिए आवश्यक है कि प्रशासन और समाज दोनों मिलकर इस समस्या के खिलाफ सख्त कदम उठाएं।

Helpline

पुलिस स्टेशन

बाग-ए-बहू	2459777
बख्शी नगर	2580102
बस स्टैंड	2575151
शहर	2543688
गांधी नगर	2430528
गंग्याल	2482019
नौबाद	2571332
पक्का डांगा	2548610
रेलवे स्टेशन	2472870
सैमिक कॉलोनी	2462212
सतवारी	2430364
चन्नी हिम्मत	2465164
ट्रांसपोर्ट नगर	2475444
त्रिकुटा नगर	2475133
गांधी नगर	2459660
एसएसपी शहर	2561578
एसपी शहर उत्तर	2547038
एसपी दक्षिण	2433778

सार्वजनिक उपयोगिता सेवाएँ

इंडियन एयर लाइन्स	
शहर कार्यालय	2542735
एयर पोर्ट	2430449
जेट एयर वेज़	2453999
सिटी ऑफिस	2573399

रेलवे

रेलवे पूछताछ	131, 132, 2476407
बुकिंग	2470318
आरक्षण	2470315

पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग स्टेशन

बख्शी नगर	2543557
गांधी नगर	2430786
कंपनी बाग	2542582
नया प्लॉट	2573429
पंजतीर्थी	2547537

दूरसंचार विभाग

डायरेक्टरी पूछताछ	197
फॉल्ट रिपेयर	198
ट्रंक बुकिंग	180
बिलिंग शिकायत	2543896

जम्मू नगर पालिका

जं. लाइन्स	2578503
प्रशासन अधिकारी	2542192
स्वास्थ्य अधिकारी	2547440

डाक सेवाएँ

मुख्य डाकघर शहर	2543606
गाँधी नगर	2435863

अग्निशमन सेवाएँ

नियंत्रण कक्ष	101,132, 2476407
शहर	2544263
गाँधी नगर	2457705
नहर	2554064
गंग्याल	2480026

रसोई गैस डीलर

चिनाब गैस	2547633
गुलमौर गैस	2430835
जैकफेड	2548297
एचपी गैस	2578456
शिवांगी गैस	2577020
तवी गैस	2548455

पावर हाउस

गाँधी नगर	2430180
नहर रोड	2554147
जानीपुर	2533828
नानक नगर	2430776

परेड	2542289
सतवारी कैंट	2452813

अस्पताल

जीएमसी अस्पताल	2584290
एस.एम.जी.एस. अस्पताल	2547635
सी.डी. अस्पताल	2577064
डैंटल अस्पताल	2544670
गांधी नगर अस्पताल	2430041
सरवाल अस्पताल	2579402
जी.बी. पंत कैंट अस्पताल	2433500
आयुर्वेदिक कॉलेज	2543661
सी.आर.पी. अस्पताल	2591105
आचार्य श्री चंदर	2662536
मानसिक अस्पताल	2577444
स्वामी विवेकानंद	2547418
ब्लड बैंक	2547637
एम्बुलेंस	2584225, 2575364
एम्बुलेंस (रेड क्रॉस)	2543739

नर्सिंग होम

मददन अस्पताल	2456727
मेडिकेयर	2435070
त्रिवेणी नर्सिंग होम	2452664
सुविधा नर्सिंग होम	2555965
अल. फिरदौस नर्सिंग होम	2545050
आस्था नर्सिंग होम	2576707
बी एन चैरिटेबल ट्रस्ट	2505310
चोपड़ा नर्सिंग होम	2573580
हरबंस सिंह मेम हॉस्पिटल	2541952
जीवन ज्योति	2576985
युद्धवीर नर्सिंग होम	2547821
मीडियाएड नर्सिंग होम	2466744
सीता नर्सिंग होम	2435007
विभूति नर्सिंग होम	2547969
रामेश्वर नर्सिंग होम	2580601
बी एन चेरिटेबल	2555631
महर्षि दयानंद	2545225

देवी कटरा रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का विस्तार : मंडल रेल प्रबंधक, जम्मू ने किया नए एस्केलेटर का उद्घाटन

रोहित शर्मा

कटरा : जम्मू मंडल में यात्री सुविधाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, मंडल रेल प्रबंधक जम्मू, श्री विवेक कुमार, ने आज दिनांक 06 मार्च को श्री माता वैष्णो देवी कटरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म 2 और 3 के मध्य नवनिर्मित एस्केलेटर (स्वचालित सीढ़ी) का विधिवत उद्घाटन किया। इस दौरान मंडल के वरिष्ठ अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस नई सुविधा से स्टेशन पर आने वाले हजारों तीर्थयात्रियों, विशेषकर बुजुर्गों, दिव्यांगों और बच्चों को एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर जाने में काफी सुगमता होगी।

यात्रियों को मिलने वाली सुविधा पर बात करें, तो

कटरा रेलवे स्टेशन पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए पहुँचते हैं। जिसके परिणामस्वरूप एस्केलेटर की सुविधा से भारी सामान के साथ आवाजाही करने वाले यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी।

एस्केलेटर की सुविधा से प्लेटफार्मों पर भीड़ प्रबंधन में मदद मिलेगी और यात्रियों का समय भी बचेगा।

इस उद्घाटन के दौरान मंडल रेल प्रबंधक, ने स्टेशन परिसर का गहन निरीक्षण भी किया और स्वच्छता बनाए रखने तथा यात्री सुविधाओं को और बेहतर करने के निर्देश दिए।

यात्रियों को प्रदान की गई सुविधा पर मंडल रेल प्रबंधक, श्री विवेक कुमार ने बताया, ' कि रेलवे का मुख्य उद्देश्य यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करना है।

कटरा स्टेशन पर इस एस्केलेटर की शुरुआत से वैष्णो देवी यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं का अनुभव और अधिक सुखद और आरामदायक होगा।

सीएचसी मेंढर में नशा मुक्त भारत अभियान पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

अनिल भारद्वाज

पुंछ/राजौरी : समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) मेंढर के कॉन्फ्रेंस हाल में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत एक प्रशिक्षण व जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जमीनी स्तर पर लोगों में जागरूकता बढ़ाना और अभियान को प्रभावी ढंग से लागू करना था।

यह कार्यक्रम मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) पुंछ डा. परवेज अहमद खान के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण सत्र का संचालन डा. फमीदा बांडे (मेडिकल ऑफिसर एटीएफ) और मिस सायमा (काउंसलर एटीएफ) ने किया जो पुंछ जिले की प्रशिक्षक हैं। कार्यक्रम में करीब 30 लोगों ने भाग लिया, जिनमें विभिन्न प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) के डॉक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ, शिक्षक और स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य शामिल थे। इस दौरान प्रतिभागियों को नशा मुक्त भारत अभियान के उद्देश्य, रणनीति और जमीनी स्तर पर इसके क्रियान्वयन के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षकों ने बताया कि नशे की लत के मामलों की समय पर पहचान करना, समाज में जागरूकता फैलाना और लोगों की भागीदारी बढ़ाना बहुत जरूरी है, ताकि नशे की समस्या पर प्रभावी तरीके से रोक लगाई जा सके। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को नशे के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्प्रभावों के बारे में भी बताया गया। उन्होंने कहा कि नशा केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को ही नहीं बल्कि परिवार और समाज को भी प्रभावित करता है।

इस अवसर पर स्वास्थ्य कर्मियों, शिक्षकों और सामाजिक संगठनों की भूमिका पर भी जोर दिया गया।

होली के पावन अवसर पर नगरी में ऐतिहासिक बजुह नदी के किनारे गंगा आरती का आयोजन

सबका जम्मू कश्मीर

नगरी : कस्बा नगरी में होली के पावन अवसर पर ऐतिहासिक बजुह नदी के किनारे भव्य गंगा आरती का आयोजन किया गया। इस धार्मिक कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने भाग लेकर आरती में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के दौरान मुंसिपल कमेटी के पूर्व अध्यक्ष अनिल सिंह, भारत भूषण, समाजसेवक दिलीप मेहता, समाजसेवक महेंद्र पाल शर्मा, मां बाला सुंदरी मंदिर के पंडित संजू पुरी, महंत सहित कस्बे के कई गणमान्य लोग मौजूद रहे और उन्होंने मिलकर गंगा आरती की। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे अनिल सिंह ने कहा कि बजुह नदी कस्बा नगरी की एक ऐतिहासिक नदी है और इसकी पवित्रता बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि कस्बा वासियों ने यह संकल्प लिया है कि अब हर वर्ष इस ऐतिहासिक नदी के किनारे गंगा आरती का आयोजन किया जाएगा, जिसमें सभी लोग बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।

उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि बजुह नदी में कोई भी गंदगी न डाले और इसे स्वच्छ व पवित्र बनाए रखने में अपना योगदान दें, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस ऐतिहासिक नदी की महत्ता को समझ सकें।

अनुज अग्निहोत्री ने सिविल सेवा परीक्षा में टॉप किया; राजेश्वरी सुवे एम, आकाश ढुल को दूसरी, तीसरी रैंक मिली : यूपीएससी

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : एमबीबीएस स्नातक अनुज अग्निहोत्री ने सिविल सेवा परीक्षा 2025 में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है, जिसके परिणाम शुक्रवार को संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा घोषित किए गए। राजेश्वरी सुवे एम और अकांश ढुल ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

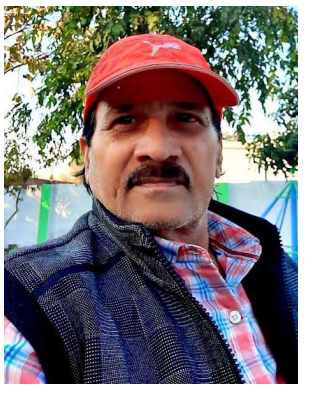

अग्निहोत्री ने चिकित्सा विज्ञान को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनकर परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने राजस्थान के जोधपुर स्थित अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईएमएस) से एमबीबीएस (बैचलर ऑफ मेडिसिन एंड बैचलर ऑफ सर्जरी) की उपाधि प्राप्त की है। चेन्नई के अन्ना विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग (ईईई) में स्नातक (बीई) की डिग्री प्राप्त राजेश्वरी ने समाजशास्त्र को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनकर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय से वाणिज्य स्नातक (बीकॉम) की डिग्री प्राप्त अकांश ने वाणिज्य और लेखांकन को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनकर तीसरा स्थान प्राप्त किया।

प्रसिद्ध मूर्तिकार गणेश कुमार शर्मा को इराक के "रॉयल क्लब फॉर लिटरेचर एंड पीस" ने दिया गोल्डन स्टार मेडल

सबका जम्मू कश्मीर

हीरानगर : अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध मूर्तिकार गणेश कुमार शर्मा को इराक के "रॉयल क्लब फॉर लिटरेचर एंड पीस" द्वारा प्रतिष्ठित गोल्डन स्टार मेडल से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह सम्मान ललित कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान और कला के सौंदर्य को बढ़ावा देने के लिए दिया गया।

यह सम्मान "क्रिएटिव फुटप्रिंट्स" नामक अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी के फाइन आर्ट्स वर्ग में प्रदान किया गया, जिसका आयोजन रॉयल क्लब इराक ने किया था। इस प्रदर्शनी में दुनिया के कई देशों के कलाकारों ने भाग लिया, जिनमें से चुनिंदा कलाकारों को सम्मानित किया गया। गणेश कुमार शर्मा इस सम्मान को पाने वाले भारत के एकमात्र मूर्तिकार रहे।

गणेश कुमार शर्मा अपनी अनोखी और रचनात्मक मूर्तियों के लिए जाने जाते हैं। उनकी कला में प्रकृति और मानव जीवन की झलक देखने को मिलती है। वे देवर पत्थर, ग्रेनाइट, संगमरमर, टेराकोटा तथा देवदार और शीशम की लकड़ी जैसे कई माध्यमों में मूर्तियां बनाते हैं।

उनकी प्रमुख कृतियों में "इटरनल लव", "द डांसर" और "मदर अर्थ" शामिल हैं, जिन्हें कई अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जा चुका है।

इस उपलब्धि पर रॉयल क्लब के अध्यक्ष डॉ. यासर मौसा, उपाध्यक्ष डॉ. वफा बदरनेह और महाप्रबंधक डॉ. फातिमा यासीन ने गणेश कुमार शर्मा को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना ।

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर
"पत्रकारों की आवश्यकता"
'सबका जम्मू कश्मीर' हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र
के लिए जम्मू कश्मीर के सभी जिला के लिए पत्रकारों की आवश्यकता है इच्छुक पत्रकार संपर्क करें
योग्यता:
- पत्रकारिता में अनुभव
- उत्कृष्ट लेखन और संपादन कौशल
- सोशल मीडिया घराने में काम करने का अनुभव
अपना बायोडाटा ई.मेल करें
sabkajammukashmir@gmail.com
संपर्क नंबर :
6005134383

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

ग्राम पंचायत हसौद में झोलाछाप बंगाली डॉ. का अवैध क्लिनिक वर्षों से संचालित

प्रशासनिक अधिकारियों पर कार्यवाही नहीं करने का लग रहा गंभीर आरोप

सबका जम्मू कश्मीर

सक्ती : जिले के अंतर्गत आने वाले ग्राम हसौद में एक कथित बंगाली झोलाछाप डॉक्टर का अवैध क्लिनिक पिछले कई दशकों से संचालित होने का मामला सामने आया है। ग्रामीणों और स्थानीय लोगों का आरोप है कि बिना वैध डिग्री और अनुमति के संचालित इस क्लिनिक में इलाज के नाम पर लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ किया जा रहा है, जिससे कई गंभीर घटनाएं और मौतें भी हो चुकी हैं।

जानकारी के अनुसार, पूर्व में भी इसी कथित बंगाली डॉक्टर द्वारा इलाज के दौरान एक वृद्ध महिला की मौत हो गई थी। उस समय मामला गंभीर होने पर पुलिस प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए आरोपी डॉक्टर को गिरफ्तार कर जेल भेजा था तथा उसके अवैध क्लिनिक को सील कर दिया गया था।

लेकिन हैरानी की बात यह है कि कुछ समय बाद आरोपी जमानत पर रिहा होकर वापस आ गया और प्रशासन द्वारा सील किए गए क्लिनिक को कथित तौर पर जबरन तोड़कर दोबारा अवैध रूप से क्लिनिक का संचालन शुरू कर दिया। ग्रामीणों का कहना है कि इसके बाद से यह झोलाछाप डॉक्टर लगातार गांव और आसपास के क्षेत्र के लोगों का इलाज कर रहा है, जबकि उसके पास किसी प्रकार की वैध चिकित्सा डिग्री या लाइसेंस नहीं है।

स्थानीय लोगों का आरोप है कि इस झोलाछाप डॉक्टर के इलाज के चक्कर में कई मरीजों की हालत बिगड़ी है और कुछ लोगों की जान भी जा चुकी है। बावजूद इसके प्रशासनिक स्तर पर ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही है।

ग्रामीणों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि इस पूरे मामले की जानकारी स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारियों को कई बार दी जा चुकी है। साथ ही पत्रकारों द्वारा भी लगातार इस मुद्दे को समाचार पत्रों और मीडिया के माध्यम से उठाया गया है, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी कार्रवाई करने के बजाय केवल कार्यालयों में बैठकर तमाशा देखते नजर आ रहे हैं।

हाल ही में होली के दिन ग्राम हसौद में हुई एक बड़ी घटना ने एक बार फिर इस पूरे मामले को चर्चा में ला दिया है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि समय रहते प्रशासन ने सख्त कार्रवाई की होती तो ऐसी घटनाओं को रोका जा सकता था।

अब क्षेत्र के लोगों में प्रशासन के प्रति भारी नाराजगी देखी जा रही है। ग्रामीणों ने सवाल उठाया है कि जब पहले भी मौत और गिरफ्तारी जैसी घटनाएं हो चुकी हैं, तब भी आखिर किसके संरक्षण में यह अवैध क्लिनिक दोबारा संचालित हो रहा है।

ग्रामीणों ने जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग से मांग की है कि इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर अवैध क्लिनिक को तत्काल बंद कराया जाए तथा दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में किसी भी निर्दोष व्यक्ति की जान से खिलवाड़ न हो।

अब देखना यह होगा कि समाचार सामने आने के बाद प्रशासन इस मामले को कितनी गंभीरता से लेते हुए क्या ठोस कदम उठाता है।

मढ़ीन में 15.20 ग्राम चिट्टा के साथ एक नशा तस्कर गिरफ्तार

सबका जम्मू कश्मीर

मढ़ीन : नशा तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कठुआ पुलिस ने मढ़ीन क्षेत्र में एक नशा तस्कर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब 15.20 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) बरामद किया है।

पुलिस के अनुसार 6 मार्च को पीपी मढ़ीन की पुलिस टीम ने क्षेत्र में नाका चेकिंग के दौरान एक संदिग्ध व्यक्ति को रोककर तलाशी ली।

तलाशी के दौरान उसके पास से 15.20 ग्राम हेरोइन बरामद हुई।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान बाग हुसैन पुत्र लाल दीन निवासी मुकंदपुर, तहसील मढ़ीन, जिला कठुआ के रूप में हुई है।

इस संबंध में पुलिस थाना राजबाग में एफआईआर नंबर 61/2026 धारा 8/21/22 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है और आगे की जांच जारी है।

पुलिस ने बताया कि जिले में नशा तस्करों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा।

नामी डोगरी संस्था ने संध्या गुप्ता को "हमारा गर्व" सम्मान से किया सम्मानित

सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू : इंटरनेशनल विमेंस डे के अवसर पर नामी डोगरी संस्था (रजिस्टर्ड) जम्मू द्वारा "हमारा गर्व" नामक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (अठावले) जम्मू–कश्मीर की स्टेट प्रेसिडेंट और विमेंस क्लब "मेरी पहचान" की फाउंडर प्रेसिडेंट संध्या गुप्ता को सामाजिक कार्यों में उनके उत्कृष्ट योगदान और समाज सेवा में प्रभावशाली नेतृत्व के लिए सम्मानित किया गया।

नामी डोगरी संस्था के सदस्यों ने समाज के उत्थान और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उनके समर्पण, प्रतिबद्धता और लगातार प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने इंटरनेशनल विमेंस डे के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि समाज के विकास, नेतृत्व और सामुदायिक निर्माण में महिलाओं की अहम भूमिका है। उन्होंने समाज की बेहतरी के लिए काम करने वाली महिलाओं को प्रोत्साहित करने और उन्हें पहचान देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

इस अवसर पर कई गणमान्य लोग, सामाजिक कार्यकर्ता और संस्था के सदस्य मौजूद रहे तथा महिला सशक्तिकरण और सामाजिक जिम्मेदारी पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में प्रो. अनुपमा शर्मा (पेट्रन), एडवोकेट डोगरा हरीश कैका (प्रेसिडेंट), यश पॉल यश (जनरल सेक्रेटरी), डॉ. सुशील भोला, मदन मोगोत्रा और परविंदर सिंह एप्पल सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का समापन आयोजकों द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ किया गया, जिसमें सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

महिला सशक्तिकरण विषय पर संगोष्ठी आयोजित, नैंसी कंगोत्रा ने हासिल किया पहला स्थान

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : जिला प्रशासन कठुआ द्वारा मनाए जा रहे वुमन वीक के तहत जिला सूचना केंद्र कठुआ ने लर्निंग टेम्पल हाई स्कूल में "महिला सशक्तिकरण" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

कार्यक्रम में जिला शिक्षा योजना अधिकारी अंजना मनयाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं, जबकि मोनिका गुप्ता, माधवी गुप्ता और एडवोकेट मिशी खानम विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुईं।

संगोष्ठी प्रतियोगिता में स्कूल के पांच विद्यार्थियों ने भाग लिया और महिला सशक्तिकरण व लैंगिक समानता के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में नैंसी कंगोत्रा ने पहला स्थान प्राप्त किया, जबकि पंकिता महाजन दूसरे और हसविका शर्मा तीसरे स्थान पर रहीं।

इस अवसर पर छात्रों को "वुमन इन एनर्जी" नामक एक लघु फिल्म भी दिखाई गई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों और योगदान को दर्शाया गया।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि अंजना मनयाल ने कहा कि बेटियों को शिक्षा और प्रोत्साहन देकर सशक्त बनाना एक बेहतर और समावेशी समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है।

उन्होंने अभिभावकों से विशेष रूप से बेटियों के सपनों को पूरा करने में सहयोग देने की अपील की।

कार्यक्रम की शुरुआत में स्कूल की प्रिंसिपल पल्लवी हंस और चेयरमैन नरेश कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया और जिला प्रशासन की इस पहल की सराहना की।

कार्यक्रम के अंत में विजेताओं और प्रतिभागियों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

राजौरी जिला जेल में कैदियों के दो गुटों में झड़प, तीन जेल कर्मी घायल; सुरक्षा कड़ी

अनिल भारद्वाज

जम्मू/राजौरी : जम्मू–कश्मीर के राजौरी जिला जेल में शनिवार को कैदियों के दो गुटों के बीच झड़प हो गई, जिससे जेल परिसर में कुछ समय के लिए तनाव का माहौल बन गया। झड़प के दौरान तीन जेल कर्मियों सहित कुछ कैदी घायल हो गए।

अधिकारियों के अनुसार, घटना की शुरुआत दो कैदियों के बीच हुई तीखी बहस से हुई। बताया जा रहा है कि एक कैदी कश्मीर क्षेत्र का जबकि दूसरा राजौरी का निवासी है। दोनों के बीच कहासुनी बढ़ने के बाद मामला हाथापाई तक पहुंच गया और देखते ही देखते अन्य कैदी भी इसमें शामिल हो गए।

स्थिति उस समय और तनावपूर्ण हो गई जब कुछ कैदियों ने कथित तौर पर जेल सुरक्षाकर्मियों पर पत्थर फेंक दिए। इसके बाद जेल प्रशासन ने तुरंत हस्तक्षेप कर हालात को नियंत्रित करने की कोशिश की।

सूचना मिलने पर जम्मू–कश्मीर पुलिस को भी मौके पर बुलाया गया और अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर दिए गए।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने भी जेल पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया।

अधिकारियों के मुताबिक झड़प में घायल हुए तीन जेल कर्मियों और कुछ कैदियों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। फिलहाल जेल परिसर में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है और पूरे मामले की जांच की जा रही है।

NOTICE

I, Asha Ram alias Ashya Kumar, S/o Darbari Lal, R/o Village Goond, Tehsil Nagri Parole, District Kathua (J&K), do hereby declare that Asha Ram and Ashya Kumar are one and the same person. My correct name as per my Aadhaar Card and other personal documents is Asha Ram.

If anyone has any objection regarding this declaration, he/she may contact the undersigned within 7 days from the date of publication of this notice.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर जीडीसी मेंढर में भारतीय सेना का प्रेरणादायक कार्यक्रम, छात्राओं को सेना में भर्ती होने के लिए किया प्रेरित

राजेश कुमार

मेंढर : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर भारतीय सेना ने सरकारी डिग्री कॉलेज मेंढर में छात्राओं के लिए एक प्रेरणादायक व्याख्यान का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवतियों को भारतीय सेना में करियर बनाने के लिए प्रेरित करना और उन्हें भर्ती प्रक्रिया की जानकारी देना था।

यह कार्यक्रम रामकुंड गनर्स की ओर से आयोजित किया गया। इस दौरान 59 इंजीनियर रेजिमेंट की मेजर अंजलि ने छात्राओं और कॉलेज स्टाफ को संबोधित किया। उन्होंने सेना में महिलाओं के लिए उपलब्ध अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

मेजर अंजलि ने बताया कि आज भारतीय सेना में महिलाओं के लिए कई रास्ते खुले हैं। छात्राएं एनडीए, सीडीएस, शॉर्ट सर्विस कमीशन और इंजीनियरिंग ग्रेजुएट के लिए तकनीकी प्रवेश के माध्यम से सेना में शामिल हो सकती हैं। उन्होंने भर्ती की पात्रता, आयु सीमा और चयन प्रक्रिया के बारे में भी जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि सेना में शामिल होने के लिए अच्छी पढ़ाई के साथ–साथ शारीरिक फिटनेस, अनुशासन और देश सेवा की भावना बहुत जरूरी है।

कार्यक्रम के दौरान प्रश्न–उत्तर सत्र भी रखा गया, जिसमें छात्राओं ने सेना में भर्ती और तैयारी से जुड़े कई सवाल पूछे। मेजर अंजलि ने उनके सवालों के जवाब देते हुए उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में कॉलेज के शिक्षकों और बड़ी संख्या में छात्राओं ने भाग लिया। कई छात्राओं ने सेना में शामिल होकर देश सेवा करने की इच्छा भी व्यक्त की।

कार्यक्रम के अंत में छात्राओं को बड़े सपने देखने और देश सेवा के लिए आगे आने का संद. `श दिया गया।

हरियाचक में 11.26 ग्राम चिट्टा के साथ एक नशा तस्कर गिरफ्तार

सबका जम्मू कश्मीर

मढ़ीन : जिले में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कठुआ पुलिस ने हरियाचक क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए 11.26 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार, पुलिस थाना राजबाग की टीम ने हरियाचक इलाके में नाका चेकिंग के दौरान एक संदिग्ध व्यक्ति को रोक. कर उसकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान उसके पास से करीब 11.26 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) बरामद हुई। गिरफ्तार आरोपी की पहचान हबीब दीन पुत्र रहीम अली निवासी मुकन्दपुर–कोटपुनु, तहसील मढ़ीन जिला कठुआ के रूप में हुई है।

इस संबंध में पुलिस थाना राजबाग में एफआईआर नंबर 62/2026 के तहत एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/21/22 के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया है और आगे की जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस का कहना है कि जिले में नशा तस्करों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा, ताकि समाज को नशे की बुराई से बचाया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर न्यू मिलेनियम हाई स्कूल नगरी परोल में रैली, तहसीलदार अना जमवाल ने बच्चों को दिया प्रेरणादायक संदेश

सबका जम्मू कश्मीर

नगरी : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर न्यू मिलेनियम हाई स्कूल नगरी परोल में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान तहसीलदार अना जमवाल ने स्कूली छात्रों द्वारा निकाली गई रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रैली में छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और महिला सशक्तिकरण तथा महिलाआ. ` के अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूक करने का संदेश दिया। रैली स्कूल परिसर से शुरू होकर आसपास के क्षेत्रों से होकर गुजरी।

कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर समाज में महिलाओं की अहम भूमिका और उनके सम्मान के महत्व को दर्शाया। नाटक के माध्यम से बेटियों की शिक्षा, समान अधिकार और महिलाओं के सम्मान का संदेश दिया गया।

इस अवसर पर तहसीलदार अना जमवाल ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि समाज की प्रगति के लिए महिलाओं का सशक्त होना बहुत जरूरी है। उन्होंने छात्रों को महिलाओं के सम्मान और समान अधिकारों के लिए हमेशा आगे आने की प्रेरणा दी।

स्कूल प्रबंधन और शिक्षकों ने भी महिला दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया।

गज़ल

गलतियों गुस्ताखियों का शहर है।
बहुत ऊंची हस्तियों का शहर है।
खूबसूरत फूल खिलते हैं यहां,
रंग बिरंगी तितलियों का शहर है।
जल रही शम्मां किसी के प्यार में,
यह पतंगों मस्तियों का शहर है।
खूबसूरत बच्चों की हैं टोलियां,
खिल रही किलकारियों का शहर है।
क़त्ल,डाके, चोरियां, बदमाशियां,
पत्रिका में सुर्खियों का शहर है।
शाम को सूरज ढला है इस तरह,
झील भीतर किश्तियों का शहर है।
जिस्म के उपर पसीनें दमकते,
कर्मयोगी किरतियों का शहर है।
रिश्वतों का नाच नंगा होता है,
कचहरियों पटवारियों का शहर है।
कौन वादा कर के वापस लौटा ना,
शाम भीतर सिसकियों का शहर है।
उस के दिल तक किस तरह मैं पहुंचता,
उस नज़र में पानियों का शहर है।
बालमा,तामीज़ में हर चीज़ है,
बहन, बेटी, नारियों का शहर है।

बलविंदर बालम
ओंकार नगर गुरदासपुर
पंजाब एडमिंटन कनेडा 919815625409

कविता

'मदारी आया'
देखो देखो मदारी आया,
साथ में बंदरिया और बंदर लाया,
डम डम उसने डमरू बजा कर,
दोनों को फिर केला खिलाया,
बंदरिया को था लाल रंग का सूट पहनाया,
बंदर को भी पहना कर सूट था सजाया,
फिर मदारी ने डमरू बजाया,
डमरू की आवाज से बच्चों का कारवां बाहर आया,
बंदर बंदरिया को देखकर बच्चे लगे बजाने ताली,
फिर बंदर अपनी थाली लाया,
बंदर पहुंचा बच्चों के पास बच्चों का दिल घबराया,
बोला मदारी डरो नहीं,
फिर बच्चों ने अपना हाथ बढ़ाया,
बंदर बंदरिया ने सबसे हाथ मिलाया,
बच्चे खुशी से कूदने लगे,
फिर बंदर ने अपनी थाली में सब बच्चों से पैसा डलवाया,
मदारी पैसा देखकर खुश था बच्चे बंदर बंदरिया को,
बंदर मलिक को देखकर मुस्कराया,
फिर बंदर बंदरिया ने अपना नाच दिखाया,
बच्चे अपने–अपने घर से बिस्किट, कपड़ा तो कोई फल लाया,
मदारी ने कुछ होकर फरमाया,
चलो जग्गू और जुगनी चल अपने घर,
बच्चों में भी उनको विदा करते अपना हाथ हिलाया,
बोले बच्चे अंकल जल्दी आना,
आज हमको बड़ा मज़ा आया,
मदारी बच्चों को देखकर मुस्कुराया,
चला फिर वह अपनी राह ये बोलते हुए मदारी आया, मदारी आया।

पुनीत गोयल
पटियाला पंजाब

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

सरकारी डिग्री कॉलेज में छात्र उत्पीड़न के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम, डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन

अनिल भारद्वाज

जम्मू/राजौरी : जिले राजौरी के आधीन एसजी सरकारी डिग्री कॉलेज डुंगी में एंटी–रैगिंग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों को से नो टू रैगिंग शीर्षक से तैयार की गई डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। यह कार्यक्रम कॉलेज की प्राचार्य प्रो. चंचल अंगराल के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को रैगिंग के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना तथा कॉलेज परिसर में सुरक्षित, सम्मानजनक और समावेशी वातावरण को बढ़ावा देना था। प्रदर्शित की गई डॉक्यूमेंट्री में रैगिंग से जुड़े कानूनी, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को उजागर करते हुए शैक्षणिक संस्थानों में अनुशासन और आपसी सम्मान बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

इस कार्यक्रम का समन्वय एंटी–रैगिंग के नोडल अधिकारी डा. निशु शर्मा ने किया जिन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की।

इस अवसर पर डा. मोहम्मद फरीद ने विद्यार्थियों को एंटी–रैगिंग कानूनों के प्रावधानों, नैतिक आचरण के महत्व और रैगिंग–मुक्त परिसर बनाए रखने में छात्रों की जिम्मेदारी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने छात्रों से किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने और संस्थान में गरिमा व सौहार्द की संस्कृति को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में कॉलेज के प्राध्यापक डा. प्रतिमा भूषण, डा. जाहूर अहमद, डा. श्रीन दर, डा. मो. अरशक, डा. मो. इकराम, डा. मुख्तार हुसैन तथा शफीत अहमद सहित अन्य स्टाफ सदस्य भी मौजूद रहे।

बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और कॉलेज प्रशासन द्वारा उठाए गए इस कदम की सराहना की। कार्यक्रम का समापन आपसी सम्मान, अनुशासन और भाईचारे के मूल्यों को बनाए रखते हुए रैगिंग–मुक्त शैक्षणिक वातावरण कायम रखने के सामूहिक संकल्प के साथ किया गया।

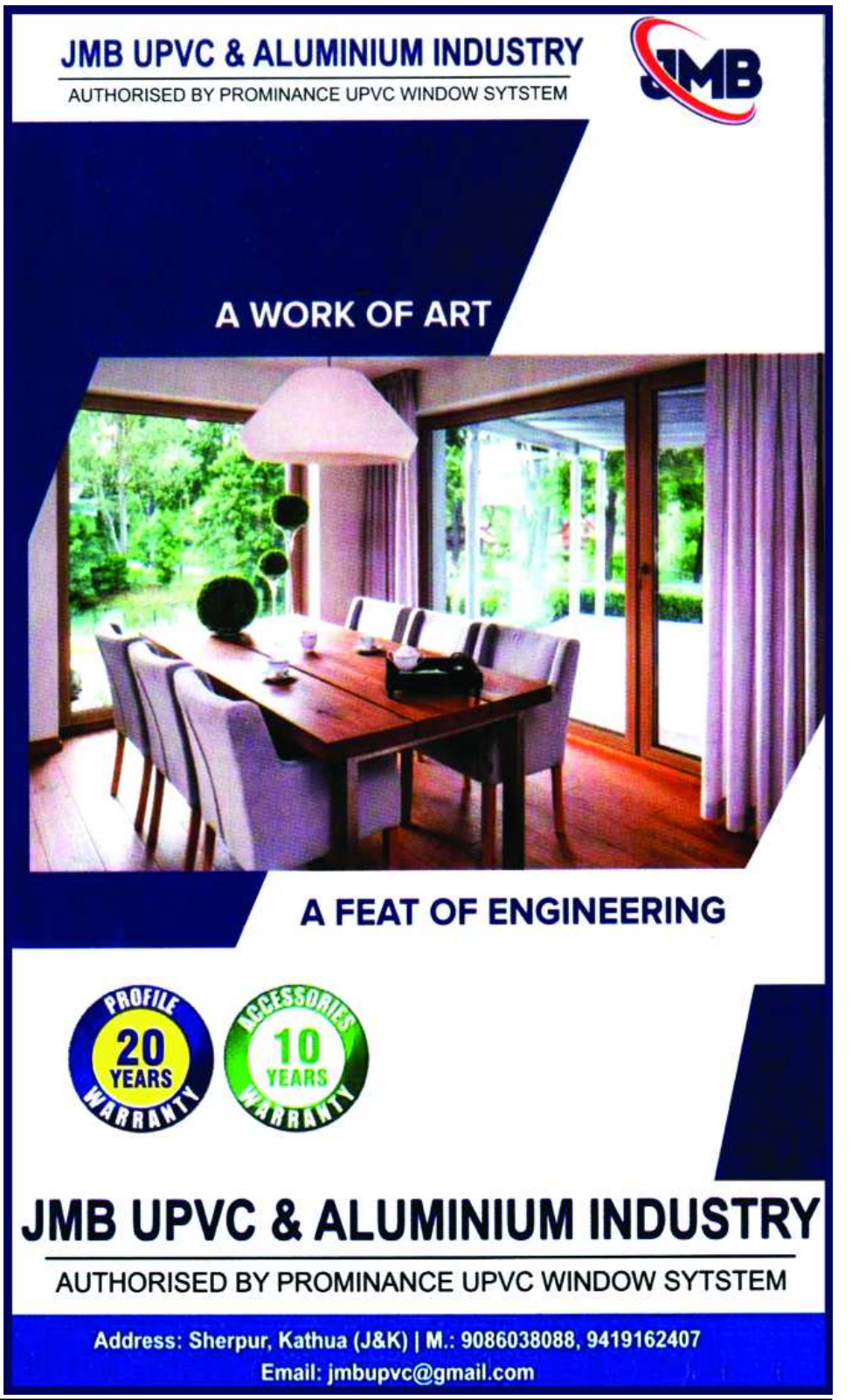

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशकः राज कुमार द्वारा एम/एस डी. आर प्रिंटिंग प्रेस, बैन बजाल्ता, तहसील जम्मू से मुद्रित एवं नगरी पैरोल नगरी, जिला कठुआ, जम्मू और कश्मीर पिन.कोड नंः 184151 । संपादकः राज कुमार